सम्पादकीय
परिवार में संवाद बढ़े, संवेदनाएँ जगें, संस्कारों का महत्त्व समझा जाये 2

विदेश समाचार
ब्रिटेन की संसद में शान्तिकुञ्ज ने प्रस्तुत किए युगऋषि के विचार 7

स्वतंत्रता दिवस
प्रबल हुई राष्ट्र के पुनर्निर्माण की भावना 8

शताब्दी वर्ष-2026

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

राजस्थान

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 सितम्बर 2025

वर्ष : 38, अंक : 05
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 अगस्त 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

युग निर्माण सत्संकल्प-9

अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।

नीति का स्थायी महत्त्व है, सफलता का अस्थाई

नीति पर चलते हुए परिस्थितिवश असफलता मिलती है तो वह भी कम गौरव की बात नहीं है। शिवाजी, राणा प्रताप, बंदा वैरागी, गुरु गोविंदसिंह, लक्ष्मीबाई, सुभाषचंद्र बोस आदि को पराजय का ही मुँह देखना पड़ा, पर उनकी वह पराजय भी विजय से अधिक महत्त्वपूर्ण थी, क्योंकि उन्होंने नीति का परित्याग नहीं किया। धर्म और सदाचार पर दृढ़ रहने वाले सफलता में नहीं, कर्त्तव्य पालन में प्रसन्नता अनुभव करते हैं। हमें अनीति और असफलता में से यदि एक को चुनना पड़े तो असफलता को ही पसंद करना चाहिए, अनीति को नहीं।

अनीति देखकर चुप रह जाना उचित नहीं है

अनीति का पोषण होता रहा तो वह दिन-दूनी रात-चौगुनी गति से बढ़ती रहेगी। दूसरों को अनीति से पीड़ित होते देखकर कितने ही लोग यह सोचते हैं कि जिस पर बीतेगी वह भुगतेगा, लेकिन यह भी सोचना चाहिए कि आज जो एक पर बीत रही है, वह कल अपने पर भी बीत सकती है। अनीति को चुपचाप देखते रहना ठीक नहीं है। शूरवीरों को आघात सहने का ही पुरस्कार मिलता है और वे इसी आधार पर लोक-श्रद्धा के अधिकारी बनते हैं।

सत्याग्रह में संकोच कैसा?

जिसे हम बुरा समझते हैं, उसे स्वीकार न करना सत्याग्रह है और यह किसी भी प्रियजन, संबंधी या बुजुर्ग के साथ किया जा सकता है। इसमें अनुचित या अधर्म रत्तीभर भी नहीं है। इतिहास में ऐसे उदाहरण पग-पग पर भरे पड़े हैं। प्रह्लाद, भरत, विभीषण, बलि आदि की अवज्ञा प्रख्यात है। अर्जुन को गुरुजनों से लड़ना पड़ा था। मीरा ने पति का कहना नहीं माना था।

आदर्श यही रहना चाहिए कि अनौचित्य को हर हालत में अस्वीकार किया जाए, चाहे किसी ने भी उसके लिए कितना ही दबाव क्यों न डाला हो। नम्रतापूर्वक ऐसे अवसरों पर अपनी हठ या असहमति व्यक्त की जा सकती है। दृढ़तापूर्वक स्पष्ट शब्दों में यह कह दिया जाए कि हमें किसी भी शर्त पर खर्चीला विवाहोन्माद स्वीकार नहीं। देखने भर में यह अवज्ञा है, किन्तु उसे किसी प्रकार अनुचित अथवा अधर्म नहीं कहा जा सकता।

मित्रता का धर्म मित्र का हितसाधन है

दोस्ती का मतलब मित्र को कुमार्ग से छुड़ाना है, पथ-भ्रष्ट करने के लिए घसीट ले जाना नहीं। ऐसे अवसरों पर हमारा साहस इतना प्रखर होना चाहिए कि नम्र, किंतु स्पष्ट शब्दों में इनकार कर सकें। इनकार, असहयोग, विरोध और संघर्ष इन चार शस्त्रों से हम अनीति और अविवेक का सामना कर सकते हैं। सत्य और न्याय के लिए इन शस्त्रों का प्रयोग हमें साहसी शूरवीर योद्धा की तरह करते रहना चाहिए।

दूरदर्शी दृष्टिकोण से जीवन लक्ष्य की प्राप्ति

मानव जीवन की गरिमा

मनुष्य का अवतरण-ईश्वरीय अवतार धारण का ही छोटा स्वरूप है। ईश्वर अवतार लेता है, धर्म के संस्थापन और अधर्म के निराकरण के लिए; साधुता का परित्राण और दुष्कृत्यों का शमन करने के लिए। भगवान की लीलाएँ इसी का ताना-बाना बुनने के लिए बनती और चलती हैं। अवतार निरुद्देश्य हास-विलास के लिए नहीं होते। वे अतिरिक्त ईश्वरीय शक्ति लेकर निजी मोद-प्रमोद के लिए नहीं आते, वरन् उस सामर्थ्य का उपयोग सृष्टि-सन्तुलन के लिए ही करते हैं।

मनुष्य निश्चित रूप से एक छोटा अवतार है। सृष्टि के समस्त प्राणियों की तुलना में उसे जो अतिरिक्त मिला है, उसे विशुद्ध रूप से दिव्य प्रयोजनों के लिए दी गई अमानत पूँजी ही समझा जाना चाहिए। जिस प्रकार हम अवतारी देवदूतों को असाधारण क्षमताओं से भरा-पूरा देखते हैं, ठीक उसी प्रकार जीव जगत के समस्त सदस्य मनुष्य को धरती पर विचरण करने वाली देव सम्पदा सम्पन्न सत्ता के रूप में देख-समझ सकते हैं। यह असाधारण अनुदान उसे अकारण ही नहीं मिला है। उसके पीछे निश्चित रूप से ईश्वर-प्रदत्त महान् कर्त्तव्य और महान् उत्तरदायित्व जुड़े होते हैं।

माया और उससे मुक्ति

माया उसी भ्रान्ति का नाम है, जो आत्मा के स्वरूप, कर्त्तव्य और लक्ष्य को भुला देती है तथा वासना और तृष्णा के हेय आकर्षणों में फँसा देती है। माया लोभ और मोह के भव-बन्धनों में बाँध देती है। माया के जाल-जंजाल से छुटकारा पाकर जीवन के स्वरूप, संसार के व्यक्तियों तथा पदार्थों के साथ अपने सम्बन्धों का यथार्थता के आधार पर निर्धारण करना ही मुक्ति है।

मुक्ति को परम पुरुषार्थ माना गया है। उसमें लोक-प्रवाह से उलटी दिशा में सोचने और चलने का साहसिक पराक्रम करना पड़ता है। अपना चिन्तन और कर्तृत्व लोगों के अनुकरण या परामर्श पर निर्धारित न रहने देकर विवेक भरी दूरदर्शिता के सहारे निश्चित करना पड़ता है। जो ऐसा कर सके, समझना चाहिए कि वह जीवित रहते हुए भी मोक्ष का महान् अनुदान प्राप्त कर सकने में सफल हो गए।

आमतौर से लोगों का सारा चिन्तन, सारा कर्तृत्व शरीर और मन की आकांक्षाएँ पूरी करने में ही लगता है। लोग पेट और प्रजनन के लिए ही जीते हैं। उन्हें इन्द्रियजन्य वासनाओं की पूर्ति और मनोगत तृष्णाओं को जुटाने के अतिरिक्त और कुछ सूझता ही नहीं। आकांक्षा की धुरी लोभ और मोह के पहियों के सहारे ही घूमती है। यही है मानव जीवन का घृणित और भ्रमित स्वरूप। इसका दुष्परिणाम जीवन-काल में हर घड़ी भुगतना पड़ता है। शोक-संताप, अभाव, दारिद्र्य, क्लेश-कलह की ठोकरें पग-पग पर लगती हैं। शरीर को रोग और मन को उद्वेग घेरे रहते हैं। जिनको सुखी बनाने की बात सोची

गई थी, वे भी क्षणिक लिप्सा की ललक में पाते कम और खोते बहुत हैं। भोग भोगने की लिप्साएँ तो पूरी नहीं हो पातीं, उलटे स्वयं ही जरा-जर्जर होकर रोते-कलपते, जलते-गलते रहते हैं। माया का, भ्रमग्रस्तता का यही स्वाभाविक परिणाम है, जिसे दुनियादार लोग शोक-सन्ताप ग्रसित होकर निरन्तर सहन करते रहते हैं। सुख की आशा करते चलते जरूर हैं, पर दुःख-निराशा के अतिरिक्त और कुछ हाथ लगता नहीं। यही है मायाग्रस्त जीवन का निरूपण और विश्लेषण।

जीवन की भूल भुलैया

समाज के प्रति हर मनुष्य का प्रचण्ड कर्त्तव्य है। वस्तुतः इसी के लिए मनुष्य का जन्म हुआ है। उसे संसार को सुखी, समुन्नत और सुन्दर बनाने के लिए अपनी अधिकाधिक क्षमताएँ और विभूतियाँ लगानी चाहिए। यही तो मानव-जीवन के दिव्य अवतरण का एकमात्र उद्देश्य है। पर होता यह है कि इन्द्रियजन्य लिप्सा, वासना, मनोगत अहंता, तृष्णा की पूर्ति में ही अधिकांश क्षमता समाप्त हो जाती है। रही-बची परिवार की संख्या बढ़ाने और उन्हें अमीर उमराव स्तर का बनाने के लिए ताना-बाना बुनने में चुक जाती है। शारीरिक श्रम, मानसिक चिन्तन एवं आर्थिक उपार्जन से जो कुछ मिलता है वह शरीर, मन और परिवार के लिए ही कम पड़ता है। अभाव अनुभव होता रहता है और अधिक कमाकर उसकी पूर्ति की उद्विग्नता छाई रहती है। ऐसी दशा में जीवनोद्देश्य की पूर्ति के लिए, लोकमंगल के लिए कुछ करना सम्भव ही नहीं हो पाता है।

इस विडम्बना ग्रस्त जीवन जंजाल में अन्तरात्मा के मनोस्थल सदा कराहते रहते हैं। मनुष्य अपने आपको खोया-खोया सा, किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा अनुभव करता है। निर्वाह के आवश्यक साधन रहते हुए भी ऐसा लगता है मानो वह मरघट में रहकर अशान्त जीवन जी रहा हो। उसे न कहीं चैन है, न शान्ति, न सन्तोष। छोटे-छोटे कारणों के सहारे बेहिसाब खीझ और बेचैनी उठती रहती है। भीतर ही भीतर कोई काटता, कचोटता रहता है, जिसकी प्रतिक्रिया बाहरी जीवन में पग-पग पर झल्लाहट के रूप में प्रकट होती है।

मायाग्रस्त जीवन की यही दुःखद प्रतिक्रिया है। इस अन्तर्व्यथा से बचने के लिए कितने ही लोग गम ग़लत करने के लिए नशे पीते हैं, कभी भड़काने वाले मनोरंजन गृहों के चक्कर काटते हैं, कभी घर छोड़कर तीर्थयात्रा, सैर-सपाटे के लिए निकलते हैं, कभी ताश, शतरंज जैसे व्यसनों में भीतरी कसक को भुलाने का प्रयत्न करते हैं, पर वे सभी साधन मृगतृष्णावत् लगते हैं।

आत्मवादी जीवन दर्शन

हम भ्रान्तियों से भरा-पूरा मायाग्रस्त जीवन जीते हैं। शरीर, मन, परिवार, समाज, भगवान किसी के भी प्रति हमारा दृष्टिकोण सही नहीं है। किसी भी क्षेत्र में सही रीति-नीति नहीं अपनाई जा सकी, इसका एकमात्र कारण आत्मा और संसार के साथ अपने संबंधों को ठीक तरह न समझ पाना ही है। इस भ्रान्ति को सुधारना, मायाग्रस्त मनःस्थिति को बदलना और लोक-व्यवहार की रीति-नीति का पुनर्निर्धारण करना, यही है अध्यात्म दर्शन का उद्देश्य। इसे जितना प्राप्त किया जा सके, उतना ही सुख-शान्ति का जीवन जिया जा सकता है।

(अखण्ड ज्योति, सितम्बर 1974, पृष्ठ 11-12)

जन्मशताब्दी वर्ष का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण अभियान है परिवार निर्माण की स्वस्थ परम्पराओं का पुनर्जीवन

परिवार में संवाद बढ़े, संवेदनाएँ जगें, संस्कारों का महत्त्व समझा जाये

गत, 16 अगस्त 2025 के संपादकीय आलेख में परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की परिवार निर्माण की परम्परा की ओर ध्यानाकर्षित किया गया था। बताया गया था कि जब ऋषि भगीरथ ने स्वर्ग में बहने वाली माँ गंगा को धरती पर अवतरित करने के लिए सहमत कर लिया, तब एक यक्ष प्रश्न खड़ा हुआ था कि धरती माता स्वर्ग से अवतरित होने वाली गंगा के वेग को क्या सह पायेगी? तब ऋषि भगीरथ ने शिवजी को प्रसन्न किया। शिवजी ने माँ गंगा को अपनी जटाओं में धारण करने के बाद उसे संतुलित वेग के साथ धरती पर प्रवाहित किया था।

वर्तमान समय में प्रज्ञावतार परम पूज्य गुरुदेव के प्रचण्ड तपोबल से युग बदलेगा, सतयुग की वापसी होकर ही रहेगी, मानव में देवत्व उभरेगा और धरती पर दिव्य विचारों से सम्पन्न देव परिवारों के रूप में स्वर्ग का सृजन होता चला जायेगा।

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी द्वारा 'यज्ञ पिता, गायत्री माता' की घर-घर प्रतिष्ठा से यह अभियान आरंभ हुआ था। जगत् जननी परम वंदनीया माताजी के ममत्व और शक्ति अनुदानों के प्रभाव से यह अभियान विराट रूप लेता चला गया। आज करोड़ों देवमानवों और देव परिवारों से विनिर्मित विराट अखिल विश्व गायत्री परिवार सारे विश्व का पथ प्रदर्शन करने को आतुर है।

वर्तमान समय में शान्तिकुञ्ज के मार्गदर्शन में अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान के अंतर्गत मानव में देवत्व जगाने और धरती पर स्वर्ग बसाने के विराट लक्ष्य के साथ छः प्रमुख कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। गत अंक में देव परिवारों के निर्माण की आवश्यकता, उसके दर्शन के साथ इन कार्यक्रमों का उल्लेख किया गया था। ये कार्यक्रम हैं-

1. दम्पति शिविरों का आयोजन
2. गर्भोत्सव कार्यक्रम (गर्भ संस्कार)
3. माँ की संस्कारशाला एवं बच्चों के विविध संस्कार
4. बाल संस्कार शालाएँ
5. कन्या/किशोर संस्कार शाला एवं प्रशिक्षण शिविर
6. युवा जागृति अभियान

इनका उद्देश्य आधुनिक जीवन शैली में टूटती-बिखरती परिवार व्यवस्था को बचाना है।

इन दिनों स्कूल-कॉलेज और शिक्षण संस्थानों में जीविकोपार्जन और लोक व्यवहार के लिए आवश्यक शिक्षा ही प्रमुख रूप से दी जा रही है। जीवन विद्या का मुख्य स्रोत तो हमारी परिवार व्यवस्था ही थी। आधुनिक जीवन शैली में बिखरती परिवार व्यवस्था के कारण गृहस्थ जीवन में संयम, सेवा, साधना से व्यक्तित्व को निखारने का जो अवसर लोगों को मिलना चाहिए, वह क्षीण होता जा रहा है। परम पूज्य गुरुदेव ने 'परिवार' को सद्गुणों को विकसित करने की **'प्रयोगशाला'**, गुण-कर्म-स्वभाव को उच्चस्तरीय बनाने एवं व्यक्तित्व को गौरवशाली बनाने का पाठ पढ़ाने वाली **'पाठशाला'** तथा हर दृष्टि से समर्थ बनने के लिए जीवनभर काम आने वाली विशिष्टताओं का अभ्यास करने हेतु **'व्यायामशाला'** बताया है। संयुक्त परिवारों में तो यह अवसर सहज रूप से मिला ही करता था, लेकिन ऋषि परम्परा में हमारी शिक्षा व्यवस्था भी ऐसी ही हुआ करती थी। गुरुकुलों में ज्ञानार्जन भी पारिवारिक व्यवस्थाओं के अंतर्गत हुआ करता था। हर विद्यार्थी को ज्ञानार्जन के साथ-साथ भिक्षाटन, आश्रम व्यवस्था, गुरुसेवा जैसे कार्यों में योगदान देना अनिवार्य हुआ करता था। शिक्षा में पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं, जीवन साधना, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, आत्मरक्षा आदि जीवनोपयोगी हर विद्या को ग्रहण करना अनिवार्य हुआ करता था। इन दिनों की शिक्षा एकांगी होती जा रही है, जिसके कारण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का समग्र विकास नहीं हो पाता।

गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे व्यक्तित्व परिष्कार और समाज निर्माण के विविध आन्दोलन आधुनिक जीवन शैली के दुष्प्रभावों से बचाने और अपनी सनातन परिवार व्यवस्था की विशेषताओं से लोगों को लाभान्वित करने के अत्यंत प्रभावशाली प्रयास हैं। इन कार्यक्रमों से लाखों, करोड़ों लोग जुड़े हैं और लाभान्वित हो रहे हैं।

वर्तमान जीवन शैली में व्यवस्थाएँ बदली हैं, परिवार छोटे हुए हैं, लेकिन ऐसा नहीं है कि अपनी प्राचीन परिवार व्यवस्था के लाभों को एकल और छोटे परिवारों में प्राप्त नहीं किया जा सकता। परम पूज्य गुरुदेव का कथन है कि मनःस्थिति बदलते ही परिस्थितियाँ बदल जाया करती हैं। आज सामाजिक व्यवस्था तो बदली ही है, लोगों की मनःस्थिति में आमूलचूल परिवर्तन हो गया है। यदि मनःस्थिति ठीक कर ली जाये तो वर्तमान परिस्थितियों में भी व्यक्तित्व एवं समाज का आदर्श और समग्र विकास किया जा सकता है।

आज की सामाजिक विसंगतियों और अवांछनीयताओं पर दृष्टि डालते हैं, तो उनके पीछे अविवेकपूर्ण चिंतन, परिवार में संवादहीनता और व्यक्तित्व विकास के लिए पर्याप्त समय एवं ध्यान न देना दिखाई देता है। यह उपेक्षा ही अवसाद, अपराध एवं आत्महत्या जैसे कृत्यों का कारण बन जाती है। कुछ उदाहरण देखें :-

माता-पिता और एक बेटी का छोटा-सा एक गरीब परिवार था। माता-पिता मजदूरी करके अपनी बेटी को पाल रहे थे। वे यथा संभव अपनी गरीबी का साया बेटी पर नहीं पड़ने देना चाहते थे। वे चाहते थे कि उनकी बेटी खूब पढ़े और जीवन में आगे बढ़ती जाये। इसके लिए वे बेटी की हर आवश्यकता पूरी करते गए। जब वह किशोरावस्था में आई तो उन स्कूल-कॉलेजों में दाखिला करा दिया, जहाँ उसे अमीर घरों के बच्चों की संगत मिली। अब वह स्वयं की तुलना अमीर बच्चों से करने लगी। देखादेखी उसकी इच्छाएँ और शान-शौकत बढ़ती गई। अब माता-पिता के लिए बेटी को अपनी सीमाओं का अहसास कराने की मजबूरी आ गई। गरीबी की बात आते ही बेटी के स्वर बदलने लगे। अमीर बच्चों की तुलना में उसे आत्महीनता सताने लगी। वह अपने माता-पिता से घृणा करने लगी। कुंठा और आत्महीनता का भाव इतना बढ़ गया कि उसने एक दिन चूहे मारने की दवा खा ली, तब बड़ी मुश्किल से उसकी जान बच पायी।

दूसरा उदाहरण अमीर माता-पिता का है। दोनों ही प्रोफेसर थे। अपार धन था, लेकिन जीवन शैली ऐसी कि उनके पास अपने बच्चे के साथ बिताने के लिए समय नहीं था। उन्होंने अपने बच्चे की किसी इच्छा पर विराम नहीं लगाया, उसकी हर इच्छा पूरी करते रहे। बड़ा हुआ तो बैंगलुरु के एक कॉलेज में भेज दिया। बेटे के शौक और आवश्यकताएँ बढ़ती ही गईं। नए शौक की जानकारी माता-पिता को दे नहीं सकता था, अतः उन्हें पूरा करने के लिए पहले सहपाठियों के सामान चुराने लगा। फिर धीरे-धीरे कॉलेज की लैब का सामान चुराकर अपनी जरूरतें पूरी करने लगा। आदतें बिगड़ती ही गईं। एक दिन उसके माता-पिता को कॉलेज की तरफ से पत्र मिला कि आपके बेटे को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है, उसे कॉलेज से निकाल दिया गया है, आप उसे आकर ले जाइये।

ऊपर की दोनों घटनाएँ बच्चों पर पारिवारिक परिस्थितियों के प्रभाव की केस स्टडी के रूप में एक पुस्तक में दर्ज हैं। दोनों ही परिस्थितियों में पाया गया कि माता-पिता और बच्चों के बीच संवादहीनता और संस्कारों का अभाव ही बच्चों के लिए संकट का कारण बना, जिसके कारण न बच्चे सुखी हुए, न उनके माता-पिता को सुख-चैन मिला।

आज के परिवारों में यही मनोदशा समाज में छूत की बीमारी की तरह सर्वत्र फैलती जा रही है। अभिभावक बच्चों के गुण, व्यवहार, संस्कारों की उपेक्षा करते और उन्हें उनकी सामर्थ्य के परे अपनी अथाह अपेक्षाओं के बोझ तले दबाते देखे जाते हैं। पढ़ाई की अंधी दौड़ में बचपन धूल धूसरित हो रहा है और अंतर्निहित प्रतिभा कुंठित हो रही है।

गायत्री परिवार का 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान समाज की इसी सोच को बदलकर हर परिवार को देव परिवार के रूप में विकसित करने का अत्यंत प्रभावशाली अभियान है। इसके अंतर्गत चलाए जा रहे कार्यक्रमों में परिवार में परस्पर संवाद बढ़ाने, संवेदनाएँ जगाने तथा संस्कार परम्परा को पुनर्जीवित कर अपनी प्राचीन ऋषि परम्परा के आधार पर व्यक्तित्व को निखारने का प्रयास किया जा रहा है।

दम्पति शिविर

आधुनिकता की होड़ और फैशनवादी सोच के कारण पति-पत्नी के बीच दूरियाँ बढ़ रही हैं, जिसका दुष्परिणाम बच्चों पर स्पष्ट दिखाई देता है। विवाहों के प्रचलित स्वरूप ने पति-पत्नी के बीच के पवित्र बंधन की गौरव गरिमा ही भुला दी है। परस्पर प्रेम एवं समर्पण का भाव तिरोहित होता जा रहा है। पश्चिमी देशों के प्रभाव से स्वच्छंदता एवं निरंकुशता बढ़ रही है, विवाह संस्कार नहीं मात्र एक अनुबंध बनता जा रहा है। इस परिवर्तन के दूरगामी परिणाम अत्यंत दुःखदायी हैं।

गायत्री परिवार द्वारा जगह-जगह दम्पति शिविरों का आयोजन कर नवविवाहित युगलों को विवाह संस्कार के पवित्र अनुबंधों का स्मरण कराया जाता है, गृहस्थ जीवन की गरिमा बतायी जाती है तथा संतानोत्पादन की जिम्मेदारी कब और कैसे उठायी जानी चाहिए, इसका बोध कराया जाता है।

गर्भोत्सव संस्कार (सामूहिक पुंसवन संस्कार)

गर्भोत्सव संस्कार गर्भवती माताओं को गर्भस्थ शिशु के सर्वांगीण विकास हेतु सम्पन्न किए जाने वाले संस्कारों की वैज्ञानिकता का बोध कराने वाला कार्यक्रम है। इसमें गर्भस्थ शिशु के शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और भावनात्मक विकास की समग्र रूपरेखा व्यवहारिक रूप से समझाई जाती है। इसके अंतर्गत गर्भवती माता को साप्ताहिक रूप से चलने वाली माँ की पाठशाला के माध्यम से गर्भ की वैज्ञानिकता के साथ उसके आहार-विहार, योग, प्राणायाम, ध्यान, दिनचर्या, आचार-विचार एवं गर्भ संवाद के बारे में विस्तृत जानकारी एवं अभ्यास बताए जाते हैं। देश के अनेक राज्यों के मेडिकल एसोसिएशंस, कॉलेज, यूनिवर्सिटी, विभिन्न संस्थाओं एवं राज्य सरकारों द्वारा गायत्री परिवार के इस कार्यक्रम को मान्यता देते हुए अपने केन्द्रों पर डॉक्टरों, नर्सों, आँगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों और स्वास्थ्य कर्मियों को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

माँ की संस्कार शाला

संयुक्त परिवारों में बच्चे अपने माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी से रोचक, रोमांचक, ज्ञानवर्धक तथा शौर्य, साहस, सद्गुण जगाने वाली, जीवनादर्शों के प्रति आस्था जगाने वाली कथा-कहानियाँ सुना करते थे, जिनके आधार पर उनका व्यक्तित्व उत्कृष्टता के साँचे में सहज रूप से ढलता जाता था। शान्तिकुञ्ज ने इस परंपरा को पुनर्जीवित करने में माता-पिता एवं अभिभावकों का सहयोग करते हुए एक वर्ष का पाठ्यक्रम तैयार किया है। इसमें प्रतिदिन के लिए बाल निर्माण की नई-नई कहानियाँ हैं, पहेलियाँ हैं, गीत और कविताएँ हैं, महापुरुषों की जीवनियाँ हैं। यह पाठ्यक्रम हर चार सप्ताह की एक पुस्तक के रूप में पुस्तकाकार में प्रकाशित है और शान्तिकुञ्ज के युवा प्रकोष्ठ द्वारा व्हॉट्सएप (9258360962) पर ऑनलाइन भी उपलब्ध कराया जा रहा है।

बाल संस्कार शालाएँ

गायत्री परिवार से जुड़े हजारों सेवाभावी युवा और भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा से जुड़े शिक्षकगणों के सहयोग से पूरे देश में बाल संस्कार शालाएँ चलाई जा रही हैं। बाल संस्कार शालाएँ खेल और मनोरंजक कथा-कहानियों के साथ बच्चों के व्यक्तित्व में उदात्त आदर्शों को समाहित करने का माध्यम हैं। यह बच्चों को एकाकी जीवन के दुष्प्रभाव तथा टीवी, मोबाइल की बुरी लत से छुटकारा दिलाती हैं। आदर्शोन्मुख जीवन की प्रेरणाएँ देने वाली इन बाल संस्कार शालाओं में जाने वाले बच्चे नशा, गाली-गलौज जैसी बुरी आदतों से सहज ही बच जाते हैं और दैनंदिन जीवन में अनेक अच्छी आदतों को समाहित करते जाते हैं। **जहाँ भी यह बाल संस्कार शालाएँ चलाई जा रही हैं, वहाँ बच्चों के अभिभावक और समाज के लोग इनके बहुत श्रेष्ठ-सकारात्मक परिणाम अनुभव कर रहे हैं।**

कन्या/किशोर कौशल प्रशिक्षण शिविर

यह शिविर किशोरों को उनके जीवन लक्ष्य के विषय में जागरूक करके सद्गुणी, स्वावलंबी, संस्कारवान बनाते हैं, उनके व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों का बोध कराते हैं। यह बच्चों को दुर्व्यसनों से बचने एवं नैतिकता व राष्ट्रभक्ति का पाठ पढ़ाते हुए उन्हें स्वाध्याय, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, समाजसेवा जैसे कार्यों के लिए प्रेरित कर उनमें अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने व सार्थक जीवन जीने का भाव जगाते हैं।

युवा जागृति अभियान

देश-विदेश के करोड़ों युवा परम पूज्य गुरुदेव के युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित हैं। नवयुग का निर्माण हमारा संकल्प है। युवा जागृति अभियान राष्ट्रोत्थान के ऐसे ही प्रेरणादायी कार्यक्रमों का आयोजन कर ज्योति से ज्योति जलाने, हर युवा में आत्मोत्थान की हूक जगाने और समाज के उत्कर्ष के लिए समर्पित होने का भाव जगाने वाला कार्यक्रम है।

परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष में देश-विदेश में ज्योति से ज्योति जलाते हुए समाज के प्रचलित प्रवाह को पलट कर समाज को नई दिशा देने का अदम्य उत्साह है। नए-नए संकल्प उभर रहे हैं, सक्रियता को नित नयी दिशाएँ मिल रही हैं। इसी क्रम में देव परिवारों के निर्माण के नए-नए कार्यक्रम भी विकसित हो रहे हैं। हाल ही में शान्तिकुञ्ज द्वारा जन्मशताब्दी वर्ष की कार्ययोजना के अंतर्गत कुछ नए प्रयोग किये गए हैं। इनकी चर्चा क्रमशः अगले अंक में।

बच्चों के व्यक्तित्व को निखारने के लिए हुए कार्यक्रम

ओसवाल जैन स्कूल में आयोजित शिविर

मित्र सोच-समझकर बनाएँ। -डॉ. सरोज गुप्ता

अच्छी आदतें हमारा भविष्य उज्ज्वल बनाती हैं।

अलवर। राजस्थान

गायत्री परिवार अलवर की ओर से ओसवाल जैन स्कूल में कन्या-किशोर कौशल शिविर का आयोजन किया, जिसमें लगभग 1100 कन्या-किशोरों ने भाग लिया। डॉ. सरोज गुप्ता ने कन्या कौशल शिविर के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें मित्र सोच समझकर बनाने चाहिए। अच्छी आदतें हमारा भविष्य उज्ज्वल बनाती हैं। उन्होंने कहा कि गायत्री मंत्र दुनिया का सबसे महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली मंत्र है। इसे गुरु मंत्र भी कहा जाता है। इसके विधिवत उच्चारण से विद्यार्थियों में अनेक मानसिक क्षमताओं का विकास होता है।

युग साहित्य भेंट किया

स्कूल लाइब्रेरी के लिए गुरुदेव का साहित्य भी भेंट किया गया। बच्चों के लिए पुस्तक अधिकतम अंक कैसे प्राप्त करें? लाइब्रेरी में रखवाई गई। शिक्षकों को युगऋषि प्रणीत साहित्य प्रदान किया गया। गायत्री परिजन रजनी शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। गायत्री भारद्वाज, मुखराम गुर्जर भी मौजूद रहे। प्रिंसिपल ने ऐसे शिविर लगाते रहने का आश्वासन दिया।

राजकीय विद्यालयों में पढ़ाया जा रहा शिक्षा के साथ संस्कारों का पाठ

विद्यार्थियों ने लिया नशा न करने का एवं जंक फूड के बहिष्कार का संकल्प

फागी। राजस्थान

गायत्री परिवार के सहयोग से राजस्थान के ग्रामीण अंचलों के विद्यालयों में बच्चों को शिक्षा के साथ संस्कार भी दिये जा रहे हैं। उन्हें नशा और जंक फूड के दुष्प्रभावों से बचने की शिक्षा भी दी जा रही है। इसका समाज में बहुत अच्छा संदेश जा रहा है।

इसी कड़ी में गायत्री चेतना केन्द्र दुर्गापुरा की ओर से फागी जिले के परवन गाँव में एक साथ तीन आंदोलन से जुड़े कार्य किए गए। पर्यावरण आंदोलन के अंतर्गत वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया। राजकीय महात्मा गाँधी विद्यालय में गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता, विद्यालय स्टाफ और लगभग 225 विद्यार्थियों ने अशोक, केसिया, जामुन, गुलमोहर, बिल्व, नीम के 51 पौधे लगाए। इससे पूर्व विद्या की देवी माँ सरस्वती का पूजन किया गया। तरु पूजन किया गया। नशा उन्मूलन आंदोलन के अंतर्गत छात्रों को नशा नहीं करने, जंक फूड, कोल्ड ड्रिंक के बहिष्कार का संकल्प कराया गया। बच्चों को मोबाइल की लत के दुष्प्रभावों से अवगत कराया गया। वहीं, आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी आंदोलन के तहत आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं-सहयोगिनियों की कार्यशाला आयोजित की गई।

विद्यालय में 51 पौधे लगाए

इन्होंने किया बढ़ चढकर सहयोग

विद्यालय की प्राचार्य अनीता महामना और विद्यालय स्टाफ के सहयोग से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। चेतना केन्द्र दुर्गापुरा के कार्यकर्त्ता सीताराम पुजारी, सुशील कुमार शर्मा, राजेश कुमार शर्मा, अशोक वर्मा, रविमोहन शर्मा, दिनेश बिहारी ने सहयोग किया। गायत्री परिवार जयपुर उप जोन समन्वयक सुशील कुमार शर्मा ने कहा कि गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं को विद्यालयों के संचालकों, प्रधानाचार्यों से संपर्क कर एक ही दिन में दो से तीन विद्यालयों में ऐसे आयोजन रखने चाहिए।

शिव मंदिर में तरू पूजन कर पौधे लगाए

जगतपुरा, जयपुर। राजस्थान

चेतना केन्द्र दुर्गापुरा की ओर से मानसून के दौरान कई स्थानों पर वृक्षारोपण किया गया। इसी कड़ी में जगतपुरा क्षेत्र के राजीव नगर स्थित शिव मंदिर में वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया। शिव मंदिर में अशोक, नीम, गुलमोहर, इमली, जामुन आदि के पौधे लगाए गए। वृक्षारोपण में स्थानीय कार्यकर्त्ता अनीता महामना और मंदिर समिति के पदाधिकारियों ने सहयोग किया। चेतना केन्द्र दुर्गापुरा के कार्यकर्त्ता सीताराम पुजारी, सुशील कुमार शर्मा, राजेश कुमार, अशोक वर्मा, सरोज शर्मा ने भी वृक्षारोपण में सहयोग किया। चेतना केन्द्र दुर्गापुरा की इस वर्ष में वृक्षारोपण की यह चतुर्थ गतिविधि थी।

गर्भोत्सव एवं पुंसवन संस्कार संपन्न

भीनमाल। राजस्थान

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान के अंतर्गत गायत्री शक्ति पीठ भीनमाल में गर्भोत्सव संस्कार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर खुशबू माहेश्वरी एवं नेमा माली का पुंसवन संस्कार विधिवत सम्पन्न कराया गया।

ग्रामे-ग्रामे यज्ञ अभियान हेतु

विशेष योजना बैठक सम्पन्न

अलवर। गायत्री तपोभूमि मथुरा में आयोजित प्राणवान कार्यकर्त्ता शिविर के अंतर्गत अलवर जिले के कार्यकत्ताओं की एक विशेष बैठक दुर्वासा आवास स्थल पर संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता अलवर जिले के संगठन प्रभारी ज्ञानेंद्र शर्मा ने की। बैठक का मुख्य उद्देश्य माता भगवती देवी जन्म शताब्दी समारोह के अंतर्गत ग्रामे-ग्रामे यज्ञ अभियान के दूसरे चरण की रूपरेखा तय करना रहा।

बैठक में विशेष रूप से तहसील कठूमर के सात गाँवों में डेढ़ दिवसीय कार्यक्रमों के आयोजन पर विचार हुआ। यज्ञ और दीपयज्ञ के यह कार्यक्रम हुल्याणा, खेरली तरफ रेला, शेखपुरा, हनीपुर, रेटा, दुधेरी, मसारी में गाँवों में प्रस्तावित किए गए। चार गाँवों के कार्यक्रम प्रभारी भी तय किए गए। चारों गाँवों में ये कार्यक्रम एक साथ सम्पन्न कराने के लिए चार अलग-अलग टोलियाँ गठित करने का निर्णय लिया गया। गोष्ठी में मुरारीलाल शर्मा (सहायक प्रबंध ट्रस्टी, अलवर शक्तिपीठ) चौधरी चरणसिंह, रघुवीरसिंह नरूका, हट्टी सिंह, श्यामलाल साहू, राधारमण विजय तथा श्यामसुंदर शर्मा उपस्थित रहे। शिविर में कठूमर क्षेत्र से पहुँचे सात प्रमुख कार्यकर्त्ताओं भगवान सिंह, उदयराम, महाराज सिंह, प्रहलाद सिंह, जितेंद्र सिंह, समुंद्र सिंह और मेवाराम ने सक्रिय भागीदारी करते हुए अभियान की रूपरेखा पर गहन विचार-विमर्श किया।

समाचार सार-संक्षेप में

प्रज्ञा अभियान की प्रतियाँ बाँटीं

ओसियाँ। जोधपुर : गायत्री परिवार के सक्रिय कार्यकर्त्ता भगवान दास राठी द्वारा ओसियां तहसील के माहेश्वरी समाज के छात्र-छात्राओं को प्रज्ञा अभियान की प्रेरणादायक पुस्तकें भेंट की गईं। इस अवसर पर समाज के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे जिनमें प्रमुख रूप से ओसियां तहसील माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष ओमजी बूब, ओसियां ग्राम माहेश्वरी समाज अध्यक्ष भंवरलाल सोनी, नथमल सोनी, सुनील लाहोटी, मुरली चांडक एवं जयकिशन जी सोनी शामिल रहे।

प्रज्ञा साहित्य वितरण

चिमाना। फलौदी जिले के सरस्वती सीनियर सैकेंडरी स्कूल, चिमाना में छात्रों और शिक्षकों को गायत्री ज्ञान पत्रक तथा प्रज्ञा अभियान पत्रिका वितरित किये गए। कार्यक्रम का संचालन इंजीनियर नेमाराम परिहार ने किया। गणपत राम बिश्नोई, रामसिंह केतु और मोहनसिंह राजावत के सहयोग से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। छात्रों को व्यक्ति निर्माण के लिए प्रेरित किया गया।

अच्छी सफलता के लिए हवन

डीग। राजस्थान : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शीशवाडा में गायत्री परिजनों ने गायत्री महायज्ञ किया। बृजभूषण शर्मा ने गायत्री मंत्र की महिमा और गायत्री यज्ञ का महत्त्व बताया। इस अवसर पर मुकेश राजपूत, बृजेंद्र शर्मा, भारती राजपूत, सुनील गुप्ता, विद्यालय स्टाफ एवं स्कूली बच्चों ने अपने श्रेष्ठ परिणाम और उज्ज्वल भविष्य के लिए आहुति दी। गाँव के मुखिया करण सिंह मुख्य यजमान रहे।

नवयुग के प्रेरणादीप

अखण्ड ज्योति ने जीवन में किया क्रान्तिकारी बदलाव

युग चेतना तीर्थ, ज्योतिकुञ्ज, परशुरामपुर, बस्ती (उ.प्र.) के संचालक **श्री अजय विश्वकर्मा** के जीवन में आए परिवर्तन की कहानी, स्वयं की जुबानी

सन् 2018 में जून महीने की बात है। मैं प्राइवेट शिक्षक के रूप में कक्षा 9वीं के 50-55 बच्चों को कोचिंग पढ़ा रहा था। कोचिंग समाप्त होने पर मुझे अपनी साइकिल से बाँयी ओर मुड़कर घर जाना था, लेकिन अनायास ही मैं दायीं ओर मुड़कर एक गायत्री परिजन के घर पहुँच गया। उन्होंने मेरा स्वागत किया, जलपान के लिए पूछा। फिर उन्होंने एक बॉक्स निकाला, जिसमें अखण्ड ज्योति पत्रिकाएँ थीं। उन्होंने कहा, **''गुरुदेव का आदेश है कि आपको पत्रिकाएँ दे दी जायें।''** यह अक्षरशः उनके ही शब्द हैं, जो मैंने अपनी डायरी में नोट करके रखे हैं। वे शिक्षक थे, इसलिए मुझे भ्रम हुआ कि वे स्वयं को गुरुदेव कह रहे हैं।

हमने अनमने मन से ही अखण्ड ज्योति उठाई और पढ़ना आरंभ किया। उसमें इतनी रुचि पैदा हुई कि कभी पेड़ पर बैठकर, तो कभी छत पर, कभी घर में यहाँ-वहाँ बैठकर मैंने लगातार 40 अखण्ड ज्योति पढ़ डालीं। अखण्ड ज्योति पत्रिकाएँ पढ़ने के बाद मैंने इंटरनेट पर 'पं. श्रीराम शर्मा आचार्य' सर्च किया, तो उनका 'बोओ और काटो' प्रवचन आया। **प्रवचन हमने कितना सुना, यह तो नहीं पता, बस आँखों से अश्रुधारा बहती रही, यह हमें याद है।** इसके बाद आदरणीय चिन्मय भैया के वीडियो सुनना आरंभ किया। बस गुरुदेव की अखण्ड ज्योति और आदरणीय भैया के वीडियो सुनकर हमने अपनी सारी कार्य योजना बनाई, कई वर्षों तक गायत्री परिवार के किसी शक्तिपीठ, शाखा, परिजन से हमारा कोई संपर्क नहीं हुआ।

ज्योति कुंज में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह के संग समर्पित कार्यकर्त्ताओं की टोली

हमने गुरुदेव के निर्देशानुसार ध्यान, यज्ञ, गायत्री उपासना, साधना, सुविचार, स्वाध्याय आदि को जीवन में उतारना आरंभ किया और उसके क्रांतिकारी परिणाम हमें मिलते गए। प्रातः 3.30 बजे उठने लगा। बच्चों को हम पढ़ाते ही थे, उन्हें भी यह शिक्षाएँ देना आरंभ किया। क्रमशः सहयोगी बढ़ते गए। आज हमारी 14 बाल संस्कार शालाएँ चल रही हैं, जिनमें 550 बच्चे भाग लेते हैं। इन बाल संस्कार शालाओं के माध्यम से उनके व्यक्तित्व विकास का हमारा लक्ष्य भलीभाँति पूरा हो रहा है।

14 आदर्श बाल संस्कार शालाएँ

कुछ बातें हैं जो हमारी बाल संस्कार शाला के बच्चे पूरी नियमितता और निष्ठा के साथ करते हैं। सभी के लिए स्वाध्याय करना अनिवार्य है। बच्चों ने पिछले 7-8 वर्षों से बाहर के खाद्य पदार्थ नमकीन, कुरकुरे, बिस्किट, समोसे आदि सब बंद कर दिये हैं। बच्चों को परिवारी जनों से जो भी पैसे भेंट में मिलते हैं, वे उन्हें मिशन के लिए दान कर देते हैं।

सफलता का आधार प्रामाणिकता, चरित्रनिष्ठा, परमार्थपरायणता

यह सफलता आश्चर्यजनक लगती है, लेकिन हमने अपनी प्रामाणिकता के आधार पर यह उपलब्धि हासिल की है। 150 बच्चों को कोचिंग देते थे, लेकिन कभी किसी से कुछ माँगा नहीं। जो कहा, सो किया। कथनी-करनी में कभी भेद नहीं रखा। हमारे पढ़ाये बच्चे हर क्षेत्र में गए हैं और अच्छी सफलता प्राप्त कर रहे हैं। व्यक्तिगत उपार्जन की कभी सोची नहीं, सभी के सहयोग से ज्योतिकुञ्ज द्वारा अनेक गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं, यह गुरुकृपा का ही प्रभाव है।

युग चेतना तीर्थ ज्योतिकुंज की गतिविधियाँ

व्यक्तित्व विकास कार्यशालाएँ : पिछले एक वर्ष से हर रविवार को चलाई जा रही हैं। इनके माध्यम से कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षित किया जा रहा है। कर्मकाण्ड, ढपली, प्रज्ञागीतों का प्रशिक्षण।

51,000 वृक्षारोपण : हर वर्ष वर्षा ऋतु में बच्चों के सहयोग से वृक्षारोपण करते हैं। पिछले वर्ष 30,000 पौधे लगाए थे। इस वर्ष 51,000 पौधे लगाने का संकल्प है। आम, नीम, जामुन, पपीता आदि वृक्षों की पौध भी बच्चों के सहयोग से ही तैयार की गई है। बच्चे और उनके अभिभावक ही लगाए गए वृक्षों की पौध का संरक्षण भी करते हैं।

दैनिक यज्ञ एवं साधना : नित्य 108 गायत्री महामंत्र की आहुतियों के साथ दो स्थानों पर यज्ञ होता है। नवरात्रि में अखण्ड जप होता है। सभी कार्यकर्त्ता, विद्यार्थियों द्वारा नियमित गायत्री उपासना। 10 हजार कॉपी से भी ज्यादा मंत्र लेखन हुआ। ग्रीष्मावकाश में विशेष साधना सत्रों का आयोजन।

प्रज्ञा अभियान की सदस्यता/नवीनीकरण के लिए बैंक खाता विवरण : SHRI VEDMATA GAYATRI TRUST (TMD) SBI AC : 306 3160 6578 (11 Digit) IFSC : SBIN0010588
इस बैंक अकाउंट में धनराशि जमा कराकर ट्रांस्फर प्रूफ और अपना पता पिनकोड व मोबाइल नंबर सहित व्हॉट्सएप : 9258369725 पर अथवा pragyaabhiyan@awgp.org पर भेज दें।

पंद्रह सौ भाई-बहिनों ने लिया जन्मशताब्दी के निमित्त साधना का संकल्प

मानसरोवर के वेदना निवारण केन्द्र में आयोजित हुआ संकल्प समारोह

जयपुर। राजस्थान
नवयुग सृजन का आधार गायत्री मंत्र की उपासना-साधना है। परम पूज्य गुरुदेव ने गायत्री महामंत्र का जप कर ही गायत्री परिवार की नींव रखी। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने भी पिछले दिनों साधना से ही शताब्दी वर्ष में वंदनीया माताजी को सच्ची श्रद्धांजलि देने का आह्वान किया था। तद्नुसार पूरे देश में जन्मशताब्दी वर्ष की सफलता के निमित्त संकल्पित होकर गायत्री मंत्र का जप करने वाले साधकों का पंजीयन भी आरंभ हो गया है।

राजस्थान ने पहल की
मानवता के उत्थान के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे जन्मशताब्दी वर्ष के विराट अभियान की शानदार सफलता और निर्विघ्न सम्पन्नता के लिए जयपुर में किरण पथ, मानसरोवर स्थित श्री वेदमाता गायत्री वेदना निवारण केन्द्र में सृजन साधना संकल्प समारोह आयोजित किया गया। इसमें 1500 कार्यकर्त्ताओं ने अग्नि की साक्षी में प्रतिदिन साधना करने का संकल्प लिया। शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार से आई सुश्री दीना त्रिवेदी की ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली ने सभी उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को यह संकल्प कराते हुए साधना से जुड़े अनुशासन भी बताए। नए साधक-साधिकाओं को गुरु मंत्र की दीक्षा भी दी गई।

जन्मशताब्दी साधना अभियान के अंतर्गत दो तरह के साधकों ने संकल्प लिए। कुछ ने प्रतिदिन 11 माला और कुछ ने प्रतिदिन तीन माला जप करने के संकल्प लिए हैं। इससे पूर्व मुख्य वक्ता के रूप में सुश्री दीना त्रिवेदी ने कहा कि हर युग में ईश्वरीय चेतना एक विशेष संकल्प के साथ आती है। शिव के साथ शक्ति हमेशा रही है। राम के साथ सीता, कृष्ण के साथ रुक्मिणी, रामकृष्ण परमहंस के साथ देवी शारदा आईं। इसी प्रकार युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के साथ शक्तिस्वरूपा माता भगवती देवी शर्मा आईं। उन्होंने गायत्री परिवार का व्यापक विस्तार किया।

महिलाएँ कर सकती हैं गायत्री मंत्र जप
सुश्री दीना त्रिवेदी ने कहा कि गायत्री मंत्र का जप महिलाएँ कर सकती हैं। उन पर कोई प्रतिबंध नहीं है। गायत्री मंत्र का जप करने वाली महिलाओं का आज तक कुछ भी अनिष्ट नहीं हुआ। गायत्री परिवार से जुड़ी लाखों बहनें प्रतिदिन गायत्री मंत्र का जप कर लाभ उठा रही हैं। केवल मासिक धर्म के चार-पाँच दिनों में माला से जप करना निषेध है। इससे पहले ब्रह्मवादिनी बहिनों ने गुरु वंदना और मातृ वंदना की। डॉ. अजय भारद्वाज ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की।

प्रमुख उपस्थिति
सृजन साधना संकल्प समारोह में गायत्री परिवार राजस्थान के प्रभारी ओमप्रकाश अग्रवाल, जयपुर उप जोन समन्वयक सुशील शर्मा, गायत्री परिवार राजस्थान के ट्रस्टी सतीश भाटी, डॉ. प्रशांत भारद्वाज, केदार शर्मा, गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी के व्यवस्थापक सोहन लाल शर्मा, गायत्री शक्तिपीठ वाटिका के व्यवस्थापक सोहन लाल शर्मा, गायत्री शक्तिपीठ कालवाड़ के ट्रस्टी धर्म सिंह राजावत ने वेदमाता गायत्री और गुरु सत्ता के समक्ष दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। संचालन केदार शर्मा ने किया। गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी के सह व्यवस्थापक मणिशंकर पाटीदार ने साधना अभियान के क्रियान्वयन पर प्रकाश डाला।

संकल्प समारोह में प्रज्ञागीत प्रस्तुत करती शान्तिकुञ्ज की टोली

आसन-माला-चित्र भेंट किए
गायत्री परिवार की ओर से सभी साधक-साधिकाओं के लिए गायत्री महामंत्र जप करने के लिए आसन, माला, गोमुखी, देवस्थापना चित्र, गायत्री मंत्र स्टिकर सहित अन्य सामान का एक किट बनाकर निःशुल्क भेंट किया गया।

ज्योति कलश यात्राओं के भव्य स्वागत समारोह

सुजानगढ़ एवं रतनगढ़ तहसीलों में भव्य स्वागत

चूरू। राजस्थान
ज्ञान यज्ञ की घर-घर में ज्योति जलाने के लिए निकाली जा रही राष्ट्र जागरण ज्योति कलश रथ यात्रा चूरू उप जोन के गाँव-ढाणियों में युग ऋषि के विचारों का बीजारोपण करती चल रही है।

चूरू की सुजानगढ़ तहसील में यात्रा ने विचार क्रांति का शंखनाद किया। इससे पूर्व सुजानगढ़ में भव्य वृक्षगंगा काँवड़ यात्रा एवं दिव्य झांकियों सहित कलश यात्रा निकाली गई। इसका समापन शक्तिपीठ पर दीपयज्ञ से हुआ। एक अगस्त को नौ कुंडीय गायत्री महायज्ञ के बाद रथयात्रा को सुजानगढ़ से विदाई देकर रतनगढ़ तहसील को सौंपा गया। नगर भ्रमण के समय जगह-जगह स्वागत एवं पूजन हुआ। जेगनिया बिदावतान स्थित गायत्री प्रज्ञापीठ में दीपयज्ञ हुआ। रथयात्रा के लाछसर, आलसर, परसनेऊ एवं बलरामपुर पहुँचने पर पुष्प वर्षा कर जोरदार स्वागत किया गया। शाम को दीपयज्ञ सम्पन्न हुआ। दो अगस्त को सुबह यज्ञ के बाद यात्रा ने राजलदेसर, बंडवा और बीनादेसर क्षेत्र का भ्रमण किया। 15 अगस्त तक यात्रा रतनगढ़ तहसील के कई गाँवों में पहुँची। इसके बाद रथयात्रा चूरू जिले के सरदारशहर क्षेत्र में प्रवेश कर गई।

इस ज्योति कलश यात्रा ने सभी लोगों तक शान्तिकुञ्ज का संदेश पहुँचाया। सैकड़ों लोग गायत्री परिवार से जुड़े और अनेक देवस्थापनाएँ एवं संस्कार सम्पन्न हुए। कार्यक्रम में सरपंच, जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

यात्रा के प्रमुख सहयोगी
यात्रा को सफल बनाने में सुजानगढ़ के बन्नेसिंह राठौड़, सज्जन कुमार शर्मा, चतुर्भुज तथा रतनगढ़ के गायत्री परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता गोपाल स्वामी, गणेशराम, राजलदेसर के लालचंद सहित अन्य कार्यकर्त्ताओं के साथ नीलम बहिन जी के नेतृत्व में मातृशक्ति का उल्लेखनीय योगदान रहा।

सुजानगढ़ में ज्योति कलश रथ का स्वागत करते नगरवासी और उससे पूर्व निकाली गई वृक्ष काँवड़ यात्रा

बूंदी में स्वागत और देवस्थापनाएँ

बूंदी। राजस्थान: राष्ट्र जागरण ज्योति कलश रथयात्रा का राजस्थान के बूंदी जिले की तालेड़ा पंचायत समिति में दिनांक 15 जुलाई को आरती उतार कर, शंखध्वनि एवं पुष्प वर्षा के साथ भव्य स्वागत किया गया। यह रथयात्रा बरुंधन, डोरा, लक्ष्मीपुर, भवानीपुरा आदि ग्राम पंचायतों से निकली, जहाँ बहुत बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों ने दिव्य ज्योति कलश के दर्शन किए। गायत्री शक्तिपीठ पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें क्षेत्र के मुख्य अधिकारी एवं गायत्री परिवार के वरिष्ठ परिजन उपस्थित हुए। सायं काल में ग्राम भवानीपुर में दीप महायज्ञ का आयोजन हुआ। ग्राम जाकमुंड में भी यज्ञ का आयोजन हुआ। विद्यालय के बालकों को भारतीय संस्कृति की महानता के विषय में प्रेरणाप्रद उद्बोधन प्रदान किया गया।

जन्म शताब्दी कार्यक्रम के लिए लिया समयदान-अंशदान का संकल्प

श्रीमाधोपुर में कार्यकर्त्ताओं को संबोधित करती शान्तिकुञ्ज की टोली

नीमकाथाना। राजस्थान
वंदनीया माताजी की जन्म शताब्दी एवं अखंड दीपक के शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों के प्रचार के लिए शान्तिकुञ्ज हरिद्वार से निकली जनसंपर्क टोली की संगोष्ठियों में स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के माध्यम से बढ़-चढ़कर समयदान एवं अंशदान के संकल्प उभर रहे हैं।

गायत्री शक्तिपीठ श्रीमाधोपुर पर कार्यकर्त्ता गोष्ठी का आयोजन हुआ। शान्तिकुञ्ज की टोली ने जन्म शताब्दी वर्ष की विशेषता और वैश्विक परिवर्तन में युग निर्माण आन्दोलन की भूमिका पर बड़े विस्तार के साथ चर्चा की। टोली सदस्य नंदकुमार पांडे एवं देवेश शर्मा ने जनवरी 26 एवं नवंबर 26 में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में भागीदारी के लिए परिजनों से साधनात्मक योगदान देने का आह्वान किया। उन्होंने कार्यक्रमों की सफलता के लिए समयदान एवं अंशदान का आह्वान भी किया, जिसके परिणाम स्वरूप शानदार संकल्प उभरे। नीमकाथाना जिले के पाटन तथा उदयपुरवाटी तहसील के गायत्री प्रज्ञापीठ नवोडा मावता में भी कार्यकर्त्ता गोष्ठी सम्पन्न हुई।

हनुमानगढ़ में स्वागत

हनुमानगढ़। राजस्थान
राष्ट्र जागरण दिव्य ज्योति कलश रथयात्रा के अंतर्गत हनुमानगढ़ शहर भ्रमण के समय फाटक गौशाला में दीप महायज्ञ सम्पन्न हुआ। परिजनों को वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी एवं अखंड दीप के शताब्दी वर्ष की महत्ता तथा अखंड ज्योति, युग निर्माण योजना व प्रज्ञा अभियान से अवगत कराया गया।

राष्ट्र जागरण दिव्य ज्योति कलश रथ यात्रा का राजीव पैलेस, हनुमानगढ़ टाउन में गर्मजोशी से स्वागत किया गया। इस अवसर पर परिजनों को देवस्थापना, गायत्री चालीसा एवं प्रज्ञा अभियान सप्रेम भेंट किया गया। जिला समन्वयक सुधीर सिंह गोदारा ने सभी का आभार प्रकट किया।

उत्साह के साथ चलाया राष्ट्र वंदना सामाजिक सरोकार अभियान

अलवर। राजस्थान
दिव्य ज्योति कलश रथ यात्रा के तृतीय चरण में प्रवेश करते हुए अलवर में 10 अगस्त से 16 अगस्त तक राष्ट्र वंदना सामाजिक सरोकार अभियान चलाया गया। इस उपलक्ष्य में गायत्री परिवार अलवर ने पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी, दक्षिणी एवं मध्य जोन में सायंकालीन दीपयज्ञ कर राष्ट्र के उत्कर्ष के लिए वंदना की। इसी कड़ी में अखैपुरा के श्री दुर्बल नाथ महाराज जी के मंदिर लालखान के पास में महिला मंडल की ओर से दीप यज्ञ किया गया।

अभिव्यक्ति — क्रांति का शंखनाद कर रहा प्रज्ञा अभियान

स्वतंत्रता आंदोलन के समय जिस प्रकार 'स्वराज' और 'केसरी' पत्र ने क्रांति का शंखनाद किया था, उसी प्रकार वर्तमान में विचार क्रांति के द्वारा नए युग के आगमन की सूचना देने का पुनीत कार्य 'प्रज्ञा अभियान' पाक्षिक कर रहा है। यह साधारण समाचार पत्र नहीं, बल्कि युग निर्माणी कार्यकर्त्ताओं की कर्मठता और निष्ठा से लिखी गई वह जाज्वल्यमान पाती है, जो मिशन की सम्पूर्ण गतिविधियों से हमें अवगत कराती है और साथ ही स्वस्थ, श्रद्धाभरी प्रतिस्पर्धा के माध्यम से हमारे भीतर और अधिक योगदान देने का उत्साह जगाती है।

यह अन्य पत्र-पत्रिकाओं से भिन्न, केवल सकारात्मक और रचनात्मक कार्यों के समाचार अपने कलेवर में समेटे हुए है। इसके राजस्थान संस्करण का शुभारंभ, राजस्थान की सभी बहिनों के लिए अत्यंत हर्ष का विषय है, क्योंकि इसके द्वारा राजस्थान में नारी संगठन के कार्यों को एक मुखर और सशक्त मंच प्राप्त होगा। नारी जागरण सहित सभी सप्त आंदोलनों की प्रेरक बयार राजस्थान के कोने-कोने तक पहुँच सकेगी।

अब यह हम सबका दायित्व है कि प्रज्ञा अभियान का सदस्यता अभियान संकल्पपूर्वक बढ़ाएँ और इसे राजस्थान के प्रत्येक गाँव और ढाणी तक पहुँचायें। वंदनीया माताजी के जन्म शताब्दी वर्ष में हर कार्यकर्त्ता का प्रयास होना चाहिए कि प्रज्ञा अभियान के माध्यम से उज्ज्वल भविष्य की दिशा में प्रेरणा और उत्साह से भरा हर समाचार गाँव-गाँव पहुँचे। ऐसा होने से राजस्थान में नए युग का सूर्योदय शीघ्र होगा।

– शालिनी वैष्णव, महिला संगठन समन्वयक, राजस्थान जोन

राजस्थान में विद्यालयों में जिलेवार सक्रियता के समाचार सार-संक्षेप में

कन्या कौशल शिविर में 150 बालिकाओं ने भाग लिया

सवाई माधोपुर : 26 जुलाई को महिला मंडल ने मैन टाउन गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल में कन्या-किशोर कौशल शिविर आयोजित किया, जिसमें 150 बालिकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शशि शर्मा, दीपशिखा गौतम एवं कृष्णा शर्मा का विशेष योगदान रहा।

अलवरः गायत्री उपासना की प्रेरणा : 26 जुलाई को मूनपुर गाँव स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में अलवर गायत्री शक्तिपीठ के तत्त्वावधान में विमला अरोड़ा ने बच्चों को विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन देते हुए गायत्री मंत्र की महत्ता बताई।

स्वास्थ्य जागरूकता: विजय मंदिर के सेकेंडरी बालिका स्कूल में गायत्री समिति के साथ संयुक्त रूप से शिविर आयोजित हुआ, जिसमें डॉ. सरोज गुप्ता, डॉ. ऋचा गुप्ता एवं जयपुर से आई सीनियर गायनेकोलॉजिस्ट डॉ. तरुछाया ने स्वास्थ्य, एनीमिया मुक्त भारत, सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम एवं गायत्री मंत्र के वैज्ञानिक महत्त्व पर उद्बोधन दिया।

विद्यालय में वृक्षारोपण, सत्साहित्य भेंट और बच्चों को मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ प्रदान की गईं। 28 जुलाई को नांगल रावत, पलखड़ी, माचड़ी और ओसवाल जैन स्कूल सहित विभिन्न विद्यालयों में 1200 बच्चों ने शिविर में भाग लिया। मोबाइल के दुरुपयोग, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा एवं गायत्री महामंत्र की महत्ता पर कार्यशालाएँ हुईं।

दीपयज्ञ श्रृंखला: अलवर में ही 10 से 15 अगस्त तक राष्ट्रीय एकता हेतु दीपयज्ञ की श्रृंखला चलाकर समाज को राष्ट्रीय एकता और व्यक्तिगत जिम्मेदारी से जोड़ा गया।

भरतपुर : 27-28 जुलाई को खंडवा से समयदान पर आई बेटियाँ पूर्णिमा एवं रिद्धिमा ने अग्रसेन स्कूल, अग्रसेन बालिका महाविद्यालय, आदर्श उच्च माध्यमिक बालिका विद्यालय, विद्या मंदिर में भारतीय संस्कृति, संस्कार, आदर्श महिलाओं एवं सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन पर प्रभावी उद्बोधन दिया। कामा तहसील के विभिन्न ग्रामों में कन्या मंडलों का गठन किया गया एवं सामूहिक साधना का संकल्प कराया गया।

सिरोही : **11 दिवसीय शिविर:** कार्यकर्त्ता उर्मिला खंडेलवाल ने राजकीय जनजाति कन्या छात्रावास में 11 दिवसीय शिविर आयोजित किया, जिसमें 50 बालिकाएं सम्मिलित हुईं।

झुंझुनू : दो अगस्त से पिलानी के आसपास के विद्यालयों में कन्या कौशल कार्यक्रम आरंभ हुआ। इनमें डॉ. मंजुला खरे, प्रेमलता सोनी, उमा शर्मा, स्वाति एवं जाह्नवी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वाति एवं जाह्नवी दोनों स्वयं पूर्व में मिशन से जुड़ी बालिकाएँ हैं, जो अब समयदान दे रही हैं। 7-8 एवं 12 अगस्त को विभिन्न विद्यालयों में कार्यक्रम संपन्न हुए।

भीलवाड़ा : 8 अगस्त को हलेड़ विद्यालय में शिविर आयोजित हुआ, जिसमें जिला समन्वयक सरोजना व्यास ने व्यक्तित्व परिष्कार और भारतीय संस्कृति पर प्रकाश डाला। क्विज प्रतियोगिता में विजेताओं को गुरुदेव का साहित्य प्रदान किया गया।
चित्तौड़गढ में 7 अगस्त को महर्षि दयानन्द स्कूल में शिविर हुआ।

विशेष आयोजन-अभियानों की एक झलक

108 दीपयज्ञों की श्रृंखला

जयपुर में 01 अगस्त को 108 घरों में यज्ञ श्रृंखला संकल्पपूर्वक आरंभ की गई। समाचार मिलने तक 11 घरों में हवन करवाए गए। 8 अगस्त को आमेर नागल और 12 अगस्त को कूकस में पुस्तक मेलों का आयोजन हुआ। जयपुर के करधनी में तीज महोत्सव गायत्री मंत्र और दीपयज्ञ से आरंभ हुआ। शिव स्वरूप पर चर्चा, पारंपरिक नृत्य एवं झूला झूलकर आनंद मनाया गया।

निःशुल्क त्रैमासिक सिलाई प्रशिक्षण

अलवर में निःशुल्क त्रैमासिक सिलाई प्रशिक्षण का प्रथम सत्र सम्पन्न हुआ। प्रथम सत्र की 20 महिलाओं को प्रमाण पत्र एवं देवस्थापना चित्र प्रदान किए गए। नए बैच में 30 महिलाओं ने प्रवेश लिया।

5100 कन्याओं ने 10000 पौधे लगाकर रचा कीर्तिमान

धौलपुर में 27 जुलाई को महिला समन्वयक प्रतिभा गुप्ता और तहसील समन्वयक अतर सिंह के प्रयास से 5100 कन्याओं ने 10000 पौधे लगाकर नया कीर्तिमान बनाया। पीत वस्त्रधारी कन्याओं ने वृक्ष देवता को कंधे पर रख कर ग्राम की गलियों से यात्रा निकाली। केन्द्रीय प्रतिनिधि डॉ. प्रशांत भारद्वाज ने कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन किया।

दीपयज्ञ : भीलवाड़ा जिले के मंडपिया में दीपयज्ञ का आयोजन किया गया। गायत्री मंत्र का अर्थ और महत्त्व समझाया गया। महिलाओं को बलिवैश्व यज्ञ के लिए प्रेरित किया गया।

राष्ट्र जागरण-जनसंपर्क की गतिविधियाँ हुई तेज

जोधपुर। राजस्थान

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार की जनसंपर्क टोली ने नवचेतना विस्तार केन्द्र, चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड, जोधपुर में संगोष्ठी आयोजित की। इसमें अधिक से अधिक संख्या में प्रज्ञा अभियान मँगाने की अपील की गई। उपस्थित परिजनों को प्रज्ञा अभियान सप्रेम भेंट किया गया।

राष्ट्रीय जनजागरण ज्योति कलश रथ यात्रा ने नारोली डांग स्थित राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय और गौरव सीनियर सेकेंडरी स्कूल में प्रेरणादायी उद्बोधन दिए। सपोटरा में दिनेशचंद सर्राफ के निवास पर दीपयज्ञ सम्पन्न हुआ।

भीनमाल उपजोन में उपजोन प्रभारी हरिगोपाल सोनी के मार्गदर्शन में अखंड ज्योति कलश रथयात्रा के द्वितीय चरण का शुभारंभ वणधर से हुआ। पुष्पवृष्टि, आरती व मंगल ध्वनियों के साथ यात्रा विभिन्न ग्रामों-वणधर, चाटवाड़ा, करड़ा, खारा में पहुँची। सभी जगह ग्रामवासियों ने भावपूर्ण स्वागत किया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि हरिकृष्ण द्विवेदी ने अपने उद्बोधन में ऋषि परंपरा, सहानुभूति, दयाभाव एवं संस्कार संवर्धन का संदेश दिया।

गायत्री शक्तिपीठ छबड़ा द्वारा घर-घर गायत्री यज्ञ अभियान चला कर लोगों तक जन्मशताब्दी वर्ष में भागीदारी का संदेश दिया गया। मुख्य यजमान हंसराज नागर (खाकरा) रहे।

जन्मशताब्दी वर्ष में राजस्थान में उभर रहा नारी संगठन का प्रखर पुरुषार्थ

जयपुर। राजस्थान

जन्म शताब्दी वर्ष की वेला में प्रज्ञा परिजनों द्वारा पूरे राजस्थान प्रांत में अभूतपूर्व उत्साह और कर्मठता के साथ मिशन को गति दी जा रही है। नारी संगठनों द्वारा नए कार्यकर्त्ता, नए साधक एवं नए भावनाशील परिजन मिशन को प्रदान करने के उद्देश्य से व्यापक गतिविधियाँ संचालित की जा रही हैं। पूरे प्रदेश में महिला मण्डलों द्वारा बाल संस्कारशाला, कन्या-किशोर कौशल शिविर, महिला जागरण शिविर, यज्ञ, दीपयज्ञ, संस्कार समारोह एवं वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रम बृहद् स्तर पर आयोजित किए गए। पूरे प्रांत में देव परिवारों के निर्माण का व्यापक अभियान चल रहा है। बहिनों ने बच्चों को सत्संकल्प, गायत्री मंत्र जप, श्रेष्ठ आचरण, राष्ट्र प्रेम और पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया। दौसा, सादुलपुर, बिजोलियाँ, पिलानी, झुंझनूं आदि स्थानों से उल्लेखनीय कार्य हुए। राजस्थान नारी संगठन की बहिनें तन-मन-धन से जुटकर गायत्री उपासना, साधना, स्वाध्याय, शिष्टता और सभ्यता के माध्यम से नवीन कार्यकर्त्ताओं के समय, प्रतिभा और साधनों को मिशन की गतिविधियों में सुनियोजित कर रही हैं। परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचारों के माध्यम से नवचेतना जगा रही हैं।

सरदारशहर में 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ की तैयारियाँ जोरों पर

सरदारशहर, चूरू। राजस्थान

मानसून के बाद बारिश का दौर थमने के साथ ही वीरों की भूमि राजस्थान में परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए तय कार्यक्रमों की तैयारियाँ जोरों पर हैं। परम वंदनीया माताजी भगवती देवी शर्मा और अखंड दीपक की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में चूरू जिले के सरदारशहर में श्राद्ध पक्ष में 18 से 21 सितम्बर तक ताल मैदान में 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया जाएगा। इस महायज्ञ में प्रतिदिन श्राद्ध-तर्पण भी कराया जाएगा, जिसके लिए लोगों में बहुत उत्साह है।

108 देव कन्याएँ बनेंगी यजमान

चूरू उप जोन संयोजक बालदान चारण ने बताया कि यज्ञ के प्रयाज में 35 गाँवों में यज्ञ, दीपयज्ञ और गोष्ठियों के माध्यम से व्यापक जनसंपर्क किया जा चुका है। पहली पारी में 432 जोड़े और 108 कन्याएँ भाग लेंगी। सुबह आठ बजे वैदिक मंत्रोच्चार के साथ यज्ञ प्रारंभ होगा। दोपहर 12 बजे प्रवचन एवं सत्संग होगा। शाम चार बजे दीपयज्ञ और सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। ओमप्रकाश पारीक, बनवारी लाल जांगिड़ और हरिप्रसाद वेदी सहित अनेक कार्यकर्त्ता पूरी निष्ठा से आयोजन की तैयारियों में जुटे हुए हैं।

वरिष्ठ कार्यकर्त्ता रामेश्वर लाल शर्मा की पुण्यतिथि पर किया पंच कुंडीय महायज्ञ

कालवाड़, राजस्थान। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ कालवाड़ के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता स्व. रामेश्वर लाल शर्मा की वार्षिक पुण्यतिथि पर 13 अगस्त को बैनाड़ रोड के श्यामनगर स्थित बाढ़ की ढाणी में पाँच कुंडीय गायत्री महायज्ञ और श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में गायत्री परिजनों ने स्व. रामेश्वर लाल शर्मा के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उनके कार्यों का स्मरण किया। गायत्री शक्तिपीठ कालवाड़, जयपुर के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी धर्म सिंह राजावत ने इस अवसर पर कहा कि रामेश्वर लाल शर्मा गायत्री शक्तिपीठ कालवाड़ के आधार स्तंभ एवं प्रेरणा स्रोत के रूप में मिशन के लिए तन मन धन से पूर्ण रूप से समर्पित थे। वे छोटे-बड़े सभी कार्यक्रमों की व्यवस्था में मुख्य भूमिका निभाते रहने वाले व्यक्ति थे। सबको साथ लेकर चलना उनके स्वभाव में था। कार्यक्रम का संचालन प्रहलाद शर्मा ने किया।

मासिक अंशदान का संकल्प लिया

आसपुर, डुंगरपुर। राजस्थान

गायत्री परिवार ट्रस्ट मंडल, आसपुर का देव परिवार सदस्य बनने के लिए मानसिंह, पुत्र उम्मेद सिंह, निवासी बनकोड़ा ने अत्यंत भावपूर्ण संकल्प लिया है। उन्होंने प्रति माह ₹1000/- का अंशदान देने का व्रत लिया और उसी क्रम में ₹4000/- की राशि ट्रस्ट को समर्पित की। ट्रस्ट मंडल ने इस उदारता के लिए उनका आभार व्यक्त करते हुए परम पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी के आशीर्वाद की कामना उनके परिवार के लिए की है। यह संकल्प देव संस्कृति के पुनर्जागरण में एक प्रेरणादायक कदम है।

महिला मंडल का गठन

भादरा, चूरू। राजस्थान : बाबा फूलदास की छतरी पर दीपयज्ञ के माध्यम से महिला मंडल का गठन किया गया। संयोजिका सुमित्रा शर्मा सहित 11 बहिनों को सदस्य नियुक्त किया गया, जो ज्योति कलश रथयात्रा के लिए समर्पित भाव से कार्य करेंगी। कार्यक्रम का संचालन उपजोन समन्वयक बालदान चारण ने किया।

स्वतंत्रता दिवस पर किया क्रांतिकारियों का पुण्य स्मरण

घर-घर पर फहराया तिरंगा

जयपुर। राजस्थान : राजस्थान की राजधानी जयपुर में स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। शक्तिपीठों पर राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया गया। इस उपलक्ष्य में गायत्री शक्तिपीठ कालवाड़ और गायत्री चेतना केन्द्र मुरलीपुरा की ओर से मुरलीपुरा में तिरंगा रैली निकाली गई, जिसमें बड़ी संख्या में स्थानीय निवासी जोश और उत्साह के साथ शामिल हुए।

विकासनगर स्थित राधा गोविंद शिव मंदिर में राष्ट्र साधना पुष्टि पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन भी हुआ। कार्यक्रम में लगभग ढाई सौ श्रद्धालुओं ने चार पारियों में यज्ञ देवता को आहुतियाँ अर्पित कीं।

गायत्री परिवार राजस्थान के प्रभारी ओम प्रकाश अग्रवाल के मार्गदर्शन में महंत श्याम सुंदर चतुर्वेदी ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तिरंगा ध्वज और हरित वृक्षों से सजी यज्ञशाला में श्रद्धालुओं ने राष्ट्र निर्माण के

राधा गोविंद शिव मंदिर में राष्ट्र साधना पुष्टि पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन

संकल्प के साथ आहुतियाँ अर्पित कीं। उत्थान सेवा संस्थान के अध्यक्ष कैप्टन शीशराम चौधरी की अगुवाई में हरीतिमा संवर्धन के लिए पौधों का वितरण भी किया गया।

सांस्कृतिक और प्रेरणादायी वातावरण

कार्यक्रम संयोजक मनु महाराज ने बताया कि गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी की टोली ने प्रज्ञा गीतों के साथ यज्ञ सम्पन्न कराया। मध्य प्रदेश के खंडवा से आई पूर्णिमा ने बालिकाओं को हर क्षेत्र में बढ़-चढकर योगदान देने का आह्वान किया। सभी को घर की छत पर फहराने के लिए तिरंगा झंडा भेंट किया गया।

विशेष संस्कार और सम्मान

कार्यक्रम में देश की आजादी के आंदोलन में सहयोग करने वाले क्रांतिकारियों और शहीदों के निमित्त विशेष आहुतियाँ अर्पित की गईं। दो पुंसवन संस्कार और एक जन्मदिन संस्कार हुए। श्री ओम प्रकाश अग्रवाल ने नवसृजन साधना अभियान में उत्कृष्ट योगदान देने वाले कार्यकर्त्ताओं का सम्मान किया। इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ वाटिका के व्यवस्थापक रणवीर सिंह चौधरी, गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी के सह व्यवस्थापक मणिशंकर पाटीदार सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

नारी के सम्मान के संकल्प का पावन पर्व है रक्षाबंधन। -श्रद्धेया शैल जीजी

शान्तिकुञ्ज में रक्षाबंधन पर श्रावणी उपाकर्म का भव्य आयोजन

शान्तिकुञ्ज में रक्षाबंधन-श्रावणी पर्व पर दीपयज्ञ सम्पन्न कराती ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज में मनाए गए श्रावणी-रक्षाबंधन पर्व ने हजारों श्रद्धालु-साधकों में मानवता के उत्थान के लिए आत्मोत्कर्ष और प्रेम भावना के विस्तार के संकल्प जगाए। अपने संदेश में अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेया शैलदीदी ने कहा कि रक्षाबंधन आत्मीयता विस्तार का पावन पर्व है। यह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के भाव को चरितार्थ करने की प्रेरणा देता है। श्रद्धेया शैल जीजी ने रक्षाबंधन को नारी शक्ति के सम्मान का संकल्प लेने का पर्व बताया।

ब्रह्ममुहूर्त में सामूहिक श्रावणी उपाकर्म संस्कार का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। शान्तिकुञ्ज के आचार्यों ने इस अवसर पर हेमाद्रि संकल्प व दश स्थान आदि का कर्मकाण्ड पूरे वैदिक विधि-विधान और युग निर्माणी प्रेरणाओं के साथ संपन्न कराया।

श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में 'वृक्षो रक्षति रक्षितः' की भावना के साथ वृक्षारोपण भी किया गया। उल्लेखनीय है कि शान्तिकुञ्ज की प्रेरणा से गुरुपूर्णिमा से श्रावणी पूर्णिमा तक वृक्षारोपण मास मनाया जाता है, इसमें पूरे देश में लाखों वृक्ष लगाए जाते हैं।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने परम पूज्य गुरुदेव के ब्राह्मण जीवन को विश्व मानवता के लिए आदर्श और अनुकरणीय बताया। उन्होंने कहा कि आज समाज को ऐसे ब्रह्मपरायण व्यक्तित्वों की आवश्यकता है, जो अपने जीवन से समाज का पथ प्रदर्शन कर सकें। श्रावणी ऐसे ही व्यक्तित्व की साधना की प्रेरणा देता है।

रक्षाबंधन के दिन श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी को राखी बाँधती बहिनें

रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में श्रद्धेया शैल जीजी ने देश-विदेश से आये हजारों साधकों एवं शान्तिकुञ्ज-देसंविवि के कार्यकर्त्ताओं, आचार्यों एवं विद्यार्थियों को रक्षा सूत्र बाँधे और सबसे उज्ज्वल भविष्य की कामना की, आशीष दिये। बहिनों ने रक्षाबंधन पर्व का शुभारंभ श्रद्धेय डॉ. साहब को राखी बाँधते हुए किया।

गुरुदेव-माताजी की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गए उनके प्रति एकनिष्ठ भाव से समर्पित साधक श्री अगमवीर सिंह जी

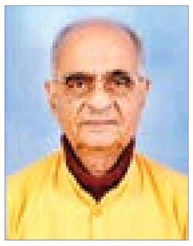

शान्तिकुञ्ज के अत्यंत प्राणवान कार्यकर्त्ता, 81 वर्षीय श्री अगमवीर सिंह का दिनांक 27 जुलाई को देहावसान हो गया। वे पूरनपुर, पीलीभीत (उ.प्र.) के मूल निवासी थे। वे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा जी के साथ सन् 1989 से शान्तिकुञ्ज में जीवनदानी कार्यकर्त्ता के रूप में सेवाएँ दे रहे थे।

समर्पण की कहानी

सन् 1989 में पहली बार अपनी माताजी के कहने पर पाँच दिवसीय सत्र में शान्तिकुञ्ज आए। घर लौटते ही अनुष्ठान किया। अनुष्ठान के अंतिम दिन स्वप्न में दादा गुरुदेव का निर्देश मिला, ''तू मेरे साथ चल।'' श्री अगमवीर सिंह जी ने अगली सुबह आनन-फानन में सामान समेटा और शान्तिकुञ्ज के लिए चल दिए। घर वालों ने पूछा, ''कब लौटोगे?'' उन्होंने कहा, ''कभी नहीं।'' वे तब से ही पूरे तन, मन, धन से पूज्य गुरुदेव के प्रति अनन्य भाव से समर्पित हो गए।

ग्राम प्रबंधन में विशिष्ट योगदान

स्व. श्री अगमवीर सिंह जी एक किसान थे। उनके कृषक कार्य के अनुभवों को शान्तिकुञ्ज-देव संस्कृति विश्वविद्यालय को भरपूर लाभ मिला। आरंभ में उन्होंने शान्तिकुञ्ज में ग्राम प्रबंधन विभाग में सेवाएँ प्रदान करते हुए भारत सरकार के सहयोग से चल रही 'ऋचा' एवं 'जलागम' योजनाओं के विस्तार में अहम योगदान दिया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में ग्राम प्रबंधन विभाग आरंभ होने पर वे इस विभाग से जुड़े और गौशाला, ग्राम प्रबंधन, गोबर गैस प्लांट के निर्माण, गौ आधारित स्वावलम्बन आदि कार्यों में अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

स्व. श्री अगमवीर सिंह जी ने जन्मभूमि आँवलखेड़ा में व्यवस्थापक के रूप में सेवाएँ प्रदान कीं। वे देव संस्कृति विश्वविद्यालय में छात्र कल्याण अधिकारी के रूप में भी सेवाएँ दे रहे थे।

अपनी जन्मभूमि पीलीभीत में श्री अगमवीर सिंह जी ने अपनी 12.5 एकड़ भूमि गौशाला के लिए श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शान्तिकुञ्ज को दान कर दी थी। वहाँ आज गौसंवर्धन, ग्राम प्रबंधन का बड़े स्तर पर कार्य चल रहा है और शोधकार्य हो रहे हैं।

महान व्यक्तित्व के धनी

स्व. श्री अगमवीर सिंह जी उच्च कोटि के साधक थे। अत्यंत स्वल्प साधनों में उन्होंने जीवनयापन किया। अपने जीवन से सैकड़ों लोगों का पथ प्रदर्शन करते हुए उन्हें साधना, समर्पण का पाठ पढ़ाया।

स्वर्गीय श्री अगमवीर सिंह जी के तीनों बच्चे भी अपने पिता की प्रेरणाओं का अनुसरण करते हुए पूरी तरह से मिशननिष्ठ जीवन जी रहे हैं। सबसे बड़े श्री राजू चौधरी और बेटी श्रीमती गीता चौधरी दोनों ही अमेरिका में कार्यरत हैं। छोटा बेटा श्री आनंदवीर सिंह म्यूजिक थेरेपिस्ट के रूप में समाज सेवा कर रहे हैं।

एक बार अमेरिका में 108 कुण्डीय यज्ञ का संकल्प लिया गया। उनकी पुत्रवधु श्रीमती शैलजा चौधरी ने अपने बाबूजी (श्री अगमवीर सिंह जी) से यज्ञ के लिए धन की कमी की बात कही। तब बाबूजी से स्वयं से शुभारंभ करने की प्रेरणा मिलने पर अपने बैंक एकाउंट में केवल एक माह खर्च की राशि शेष रखकर सारी धनराशि यज्ञ के लिए दान कर दी।

पूरनपुर में भी एक सभा आयोजित कर स्व. अगमवीर सिंह जी को भावभरी श्रद्धांजलि दी गई।

रक्षाबंधन पर स्नेह संचार एवं आत्मीयता विस्तार

श्रावणी पर हेमाद्रि संकल्प, दस विध स्नान और शक्तिपीठ में लगाया पौधा

अलवर। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ अलवर पर श्रावणी पर्व पर गायत्री परिवार के कार्यकर्ताओं ने दसविध स्नान किया। परिव्राजक उत्तम साहू ने यज्ञ के माध्यम से यज्ञोपवीत का परिवर्तन करवाया। श्रद्धालुओं ने हेमाद्रि संकल्प करते हुए वर्ष भर में हुए ज्ञात-अज्ञात पाप कर्मों का परिमार्जन किया। इस अवसर पर युवा प्रकोष्ठ एवं वरिष्ठ सदस्यों ने गायत्री शक्तिपीठ में बिल्व पत्र का पौधा रोपित किया। राजेन्द्र प्रसाद सेठी, महेन्द्र सिंह नरूका, राकेश तिवाड़ी, नवल किशोर सिंह, दौलत राम शर्मा, राधा रमण विजय, युवा प्रकोष्ठ के जितेन्द्र यादव, चंद्रपाल, मुकेश गुप्ता, विशाल भारद्वाज सहित अनेक सदस्य शामिल हुए।

111 स्थानों पर हुआ ऑनलाइन गायत्री महायज्ञ

गायत्री परिवार की ओर से रक्षाबंधन पर्व पर 111 स्थानों पर एक साथ, एक समय में ऑनलाइन यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमें राजस्थान प्रान्त के बाहर के परिजनों ने भी भाग लिया। लगभग 600 परिजनों ने भाग लिया। चीन के बीजिंग से रोहित ने भी यज्ञ में भाग लिया। शान्तिकुञ्ज हरिद्वार से राजस्थान जोन समन्वयक गौरीशंकर सैनी, राजस्थान महिला समन्वयक शालिनी वैष्णव ने रक्षाबंधन के आध्यात्मिक महत्त्व पर संबोधन दिया। राजस्थान जोन सह समन्वयक गायत्री कचोलिया ने भी संबोधित किया। यज्ञ का संचालन गायत्री परिवार जयपुर उप जोन समन्वयक सुशील कुमार शर्मा ने किया।

गायत्री शक्तिपीठ में श्रावणी उपाकर्म सम्पन्न करते परिजन

राखियों ने दिया पर्यावरण का संदेश

सादुलपुर। राजस्थान

अखिल विश्व गायत्री परिवार, सादुलपुर की ओर से वार्ड नंबर-6 में संचालित माँ भगवती बाल संस्कार शाला में विशेष पर्यावरण संदेश कार्यक्रम एवं राखी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बच्चों को दो समूहों में विभाजित किया गया। एक 10 वर्ष तक के बच्चों का तथा दूसरा बड़ी बालिकाओं का। दोनों समूहों ने उत्साहपूर्वक सुंदर-सुंदर राखियाँ बनाईं। सर्वश्रेष्ठ राखी बनाने वाले बच्चों को प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार दिए गए। शेष सभी बच्चों को बिस्किट वितरित किए गए। कार्यक्रम का सफल संचालन चंद्रकांता एवं अनिता शर्मा ने किया। इस पहल ने बच्चों में पर्यावरण चेतना एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति रुचि बढ़ाई।

मर्यादा पालन व कर्तव्य परायणता का संदेश देता है श्रावणी उपाकर्म

जयपुर। राजस्थान : ज्ञात-अज्ञात पापों का प्रायश्चित करने के लिए श्रावणी पूर्णिमा पर गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी में सामूहिक रूप से श्रावणी उपाकर्म किया गया। दश विधि स्नान कर नवीन जनेऊ धारण किए गए। यज्ञ और पौधरोपण का कार्यक्रम भी हुआ। वेदमाता गायत्री की पूजा-अर्चना के बाद परिव्राजक गायत्री प्रसाद ने मंत्रोच्चार के साथ भस्म, मिट्टी, गोबर, गोमूत्र, गो-दुग्ध, गोदधि, गोघृत, सर्वोषधि, हल्दी, कुशा, मधु का आध्यात्मिक और वैज्ञानिक महत्त्व बताते हुए स्नान कराया। एक-एक स्नान के बाद शुद्ध जल से स्नान कराया गया।

श्रावणी उपाकर्म के अंतर्गत सभी ने यज्ञोपवीत बदलते हुए और यज्ञ करते हुए जीवन में ब्राह्मणत्व को अपनाने के संकल्प लिए। एक-दूसरे को रक्षासूत्र बाँधते हुए सभी को नारी की गौरव और गरिमा को अक्षुण्य बनाए रखने का संकल्प दिलाया गया। राजस्थान जोन प्रभारी ओमप्रकाश अग्रवाल ने कहा कि श्रावणी पर्व ज्ञान और कर्म का पर्व है। इसी प्रकार रक्षाबंधन मर्यादा पालन और कर्त्तव्य परायणता का संदेश देता है। श्रावणी पर्व के दिन यज्ञोपवीत धारी वर्ष भर का आत्मिक लेखा-जोखा कर नए संकल्प लेता है।

श्रावणी पर्व पर आत्मिक उत्कर्ष की प्रेरणाएँ

18 बटुकों के यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुए

यज्ञ संचालन करती श्री गोकुलचंद उपाध्याय की टोली और पुष्करणी तालाब में सम्पन्न हो रहा श्रावणी उपाकर्म

हैदराबाद। तेलंगाना : हैदराबाद में राजस्थानी ब्राह्मण समाज ने गायत्री परिवार के यज्ञीय विधि-विधान के साथ श्रावणी उपाकर्म सम्पन्न किया। मामडपल्ली के वेंकटेश मंदिर परिसर में स्थित पुष्करिणी तालाब में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें 200 विप्र जनों ने भाग लिया। इस अवसर पर 18 बटुकों का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ।

हेमाद्री संकल्प, प्रायश्चित्त विधान, तर्पण आदि श्रावणी उपाकर्मों के साथ कार्यक्रम का संचालन गायत्री परिवार के श्री गोकुलचंद उपाध्याय की टोली ने किया। दूसरे चरण में 5 कुण्डीय गायत्रीयज्ञ एवं बटुकों का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। राजस्थानी ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष पुरुषोत्तम लाला, मंत्री रामदेव नागला, संदीप, दामोदर जोशी, भरत चाण्डा, मोहनलाल शर्मा, भगवान व्यास बिलाल व गणमान्य लोगों ने भाग लिया। गायत्री परिवार के गोकुलचंद उपाध्याय, विनोद चौरसिया, नरेश कुमार साहू, चन्द्रराज पटेल, राम आसरे जी, वेंकटेश, गीता का प्रशंसनीय सहयोग रहा।

श्रावण मास में रुद्राभिषेक

खारघर, नवी मुम्बई। महाराष्ट्र : श्रावण के पवित्र माह में खारघर में स्थित आई माता मंदिर में गायत्री परिवार खारघर एवं कामोठे के 100 से भी अधिक लोगों ने सामूहिक रुद्राभिषेक किया। श्री अवधेश नारायण वर्मा ने भगवान शंकर तथा शिव परिवार की महिमा बताते हुए रुद्राभिषेक का कर्मकाण्ड सम्पन्न करवाया।

रुद्राभिषेक के उपरांत गायत्री यज्ञ किया गया, जिसमें सभी ने विश्व कल्याण के लिए गायत्री मंत्र, शिव गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय मंत्र से आहुतियाँ प्रदान कीं। गायत्री चेतना केन्द्र के परिव्राजक श्री पीताम्बर शर्मा ने 2026 में होने वाले दिव्य अखण्ड दीपक एवं वंदनीया माता जी के जन्मशताब्दी महोत्सव पर होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी दी। गायत्री परिवार के विवेकानन्द युवा मंडल के द्वारा साहित्य स्टॉल लगा कर सभी तक पूज्य गुरुदेव का साहित्य पहुँचाया गया।

इंग्लैण्ड, लिथुआनिया और लातविया में देव संस्कृति के विस्तार की गौरव गाथा

भारतीय जीवन दर्शन की ओर बढ़ रहा है पश्चिमी देशों का आकर्षण

अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा युग नायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी अमेरिका, कनाडा, इंग्लैण्ड और लातविया के अठारह दिवसीय प्रवास के बाद शान्तिकुञ्ज लौटे। उन्होंने शान्तिकुञ्ज में आयोजित एक संगोष्ठी में कहा-

''पश्चिमी देशों के युवाओं का अध्यात्म एवं भारतीय जीवन दर्शन की ओर तेजी से आकर्षण बढ़ रहा है। वे जीवन के प्रति भारतीय दृष्टिकोण; जिसमें संतुलित आहार, संयमित व्यवहार और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध की प्रेरणाएँ मिलती है, को अपनाना चाहते हैं। यूरोप के युवाओं में भौतिकता से उत्पन्न तनाव और अकेलेपन का गहरा असर दिखता है। भारतीय जीवन दर्शन उन्हें इस तनाव से मुक्ति दिलाकर आत्मिक शान्ति की अनुभूति कराता है।

प्रस्तुत है इंग्लैण्ड, लिथुआनिया और लातविया में देव संस्कृति के विस्तार की झाँकी, सार-संक्षेप में।

अखिल विश्व गायत्री परिवार की एक ऐतिहासिक उपलब्धि

ब्रिटिश संसद में युग नेतृत्व के लिए शान्तिकुञ्ज ने प्रस्तुत किया परम पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का चिंतन

पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव 2025 में हुआ भारतीय संस्कृति का सम्मान

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की अध्यक्षता में आयोजित पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव 2025 में भाग ले रहे गणमान्य

पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव 2025 में लॉर्ड क्रिश रावल, निदेशक, फेथ इन लीडरशिप (यूके), डॉ. मार्क ओवेन, निदेशक, सेंटर फॉर रिलिजन, रीकॉन्सिलिएशन एण्ड पीस, यूनिवर्सिटी ऑफ विंचेस्टर, मिस्टर विलियम जोन्स, सीनियर फेलो, फ्यूचर ऑफ लाइफ इंस्टिट्यूट आदि प्रमुख अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति उल्लेखनीय है।

लंदन। इंग्लैण्ड

लंदन में 1 अगस्त 2025 के दिन ब्रिटिश संसद के ऐतिहासिक परिसर में 'पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव 2025' का भव्य आयोजन हुआ। यह आयोजन अखिल विश्व गायत्री परिवार, हरिद्वार द्वारा ब्रिटेन की संसद (हाउस ऑफ पार्लियामेंट, वेस्टमिंस्टर) में किया गया था, जो स्वयं में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। यह कार्यक्रम केवल एक बौद्धिक विमर्श ही नहीं था, बल्कि भारतीय संस्कृति के सार्वभौमिक मूल्यों-वसुधैव कुटुम्बकम्, करुणा एवं स्वधर्म को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का एक ऐतिहासिक अवसर भी बना। इसके माध्यम से विश्व मनीषा को यह बोध कराया जा सका कि भारत की प्राचीन आध्यात्मिक परंपराएँ आज के समय में भी विश्व के लिए मार्गदर्शक भूमिका निभा रही हैं।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और नैतिक नेतृत्व विषय पर समस्त मानवता के लिए कल्याणकारी ओजस्वी संदेश दिया। उन्होंने अपने उद्बोधन में भारतीय दर्शन और विश्व शांति की अवधारणाओं को प्रस्तुत करते हुए वर्तमान युग में उनकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

> "शांति केवल एक बाहरी स्थिति नहीं, बल्कि आंतरिक चेतना का विस्तार है। भारतीय दर्शन हमें सिखाता है कि नेतृत्व का मूल आधार आत्मानुशासन, करुणा और वैश्विक कल्याण की भावना में निहित होना चाहिए।"
> *- आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी*

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि के उद्बोधन में भारतीय जीवन मूल्यों, गायत्री मंत्र, आध्यात्मिक नेतृत्व और विश्व बंधुत्व की विचारधारा को विशेष रूप से रेखांकित किया गया था। उन्होंने बहुत ही व्यावहारिक रूप में समझाया कि कैसे अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा प्रतिपादित विचार आज भी मानवता के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो रहे हैं।

सभी उपस्थित वरिष्ठों एवं विशेषज्ञों ने डॉ. पण्ड्या के विचारों की सराहना करते हुए भारतीय आध्यात्मिकता को आज के नेतृत्व और नीतिगत विमर्श के लिए अत्यंत प्रासंगिक बताया। इस कार्यक्रम को शताब्दी वर्ष-2026 से पूर्व अंतर्राष्ट्रीय प्रस्तावना के रूप में भी देखा जा रहा है, जिससे भारत के सांस्कृतिक गौरव को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठा मिली है। यह सम्मेलन करोड़ों गायत्री साधकों और नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं को गौरवान्वित करने वाला था।

ज्योति कलश के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ दीपयज्ञ

लंदन में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की गौरवशाली उपस्थिति एवं ज्योति कलश के सान्निध्य में स्थानीय गायत्री परिजनों द्वारा 1 अगस्त को दीपयज्ञ का आयोजन किया गया। गायत्री परिवार के परिजनों के अतिरिक्त शहर के कई गणमान्य दीपयज्ञ में शामिल हुए। आदरणीय डॉ. पण्ड्या ने सभी को जन्मशताब्दी वर्ष का विशेष संदेश देते हुए स्वयं को दीपक की भाँति विकसित होने और विश्व मानवता के कल्याण के लिए समर्पित होने की प्रेरणा दी। विदित हो कि जन्मशताब्दी वर्ष-2026 के प्रयाज के क्रम में लेस्टर से अपनी यात्रा आरंभ कर ज्योति कलश लंदन पहुँचा था।

पोलैण्ड के मानद कौंसल श्री जोहरी जी से मुलाकात

लंदन में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने पोलैंड के व्रोकला शहर में भारत सरकार के मानद कौंसल श्री कार्तिकेय जोहरी जी एवं उनके सुसंस्कारी परिवार से आत्मीय भेंट की। इस अवसर पर लार्ड कुमार रावल जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस सौहार्द्रपूर्ण भेंट में लंदन में प्रस्तावित भव्य कार्यक्रम एवं भारत की वैश्विक सांस्कृतिक भूमिका को लेकर विस्तृत एवं सारगर्भित चर्चा हुई। यह संवाद भारत की आध्यात्मिक चेतना को वैश्विक मंचों पर प्रतिष्ठित करने की दिशा में एक प्रेरणादायी पहल कहा जा सकता है।

यूरोपीय लोगों में भारतीय अध्यात्म के प्रति बढ़ रही है आस्था

विल्नियस में दीपयज्ञ

विल्नियस। लिथुआनिया

लिथुआनिया के विल्नियस शहर में वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति के संवाहक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की गरिमामयी उपस्थिति में दीपयज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ। शहर के मध्य में स्थित एक प्रमुख स्थल पर आयोजित इस दीपयज्ञ में श्रद्धावान भारतीय प्रवासियों, स्थानीय नागरिकों और आध्यात्मिक जिज्ञासु साधकों ने भाग लिया। अत्यंत दिव्यता से ओतप्रोत शांत वातावरण में प्रज्वलित हो रहा प्रत्येक दीप अंतश्चेतना के प्रकाश का प्रतिनिधित्व करता प्रतीत हो रहा था। पवित्र वैदिक मंत्रों और यज्ञ की सुगंध ने एक भावपूर्ण वातावरण का निर्माण किया, जिससे उपस्थित सभी लोगों में सद्भाव और सामूहिक शांति की भावना जाग्रत् हुई।

विल्नियस में आयोजित दीपयज्ञ का संचालन करते डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

आदरणीय डॉ. पण्ड्या ने आज की दुनिया में भारतीय संस्कृति और अध्यात्म की प्रासंगिकता तथा पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा परिकल्पित विश्व बंधुत्व के संदेश पर गहन विचार साझा किए। इस आध्यात्मिक सम्मेलन को एक सार्थक सांस्कृतिक आदान-प्रदान और भारत और लिथुआनिया के बीच आध्यात्मिक संबंधों को मजबूत करने की दिशा में प्रभावशाली कदम माना जा सकता है।

माईकोलास रोमरीस विश्वविद्यालय, लिथुआनिया के उप कुलपति एवं गणमान्यों से विचार विमर्श

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने लिथुआनिया स्थित माईकोलास रोमरिस विश्वविद्यालय में उप कुलपति डॉ. नातालिया माजेइकिएने, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग विभाग की प्रमुख डॉ. अनाले मेचिसलोवाइते एवं वाइस डीन डॉ. लिनास बुकाउसकस के साथ भेंट की। इस अवसर पर शैक्षणिक आदान-प्रदान, संयुक्त शोध परियोजनाओं तथा सांस्कृतिक सहयोग को लेकर विस्तृत विचार-विमर्श हुआ। यह संवाद दोनों देशों के साझा मूल्यों और सांस्कृतिक सौहार्द्र पर आधारित उज्ज्वल भविष्य को प्रोत्साहित करने वाला था।

माईकोलास रोमरीस विश्वविद्यालय में उप कुलपति डॉ. नातालिया माजेइकिएने एवं अन्य गणमान्यों को युग साहित्य भेंट करते डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

भारतीय राजदूत से मुलाकात

लिथुआनिया में भारत के राजदूत महामहिम श्री टी.वी. नागेन्द्र प्रसाद जी से आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की भेंट हुई। इस अवसर पर भारत और लिथुआनिया के बीच सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक सहयोग को सुदृढ़ करने संबंधी विचारों का आदान-प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय वनस्पति उद्यान में एक दिव्य यज्ञ संस्कार

विशेष सम्मान

देसंविवि के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के मार्गदर्शन में लातविया के सालास्पिल्स स्थित राष्ट्रीय वनस्पति उद्यान में एक दिव्य यज्ञ संस्कार का आयोजन सम्पन्न हुआ। बड़ी संख्या में स्थानीय लातवियन परिजनों ने यज्ञ में भाग लिया। लातविया में भारत की नवनियुक्त राजदूत श्रीमती नम्रता कुमार जी की विशिष्ट उपस्थिति से इस सांस्कृतिक समारोह की गरिमा और भी बढ़ गई।

महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ

इस प्रतिष्ठित उद्यान में इस प्रकार के किसी आध्यात्मिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन की अनुमति पहली बार प्रदान की गई थी, जो भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान की सूचक है।

राजदूत श्रीमती नम्रता कुमार जी की उपस्थिति में यज्ञ कराते डॉ. चिन्मय जी

लातविया के अनेक परिजनों ने भावविभोर होकर भारतीय तिरंगे के साथ चित्र भी खिंचवाए, जो भारतीय संस्कृति के प्रति उनके आत्मीय जुड़ाव को प्रदर्शित करता है।

श्रद्धांजलि : यज्ञ में उत्तराखंड के धराली और हर्षिल में हुई बादल फटने की घटना तथा आज ही के दिन हिरोशिमा एवं नागासाकी की विभीषिका में वीरगति को प्राप्त हुए हुतात्माओं को श्रद्धांजलि स्वरूप श्रद्धापूर्वक आहुतियाँ समर्पित की गईं, उनकी आत्मशान्ति एवं सद्गति के लिए प्रार्थना की गई।

एकीकृत स्वास्थ्य एवं सांस्कृतिक शोध कार्यों पर चर्चा

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी लातवियन मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रो. वाल्डिस पिरग्स एवं एशियन इंस्टीट्यूट के निदेशक प्रो. स्लाविन्स कस्पार्स से मिले। उनके साथ एकीकृत स्वास्थ्य एवं सांस्कृतिक शोध के क्षेत्र में संभावित सहयोग के विविध आयामों पर विस्तार से चर्चा हुई। यह संवाद स्वास्थ्य एवं संस्कृति के संबंध में अनुसंधान को प्रोत्साहित करेगा।

स्वतंत्रता दिवस जन्मशताब्दी वर्ष के उत्साह में प्रबल हुई राष्ट्र के पुनर्निर्माण की भावना

शान्तिकुञ्ज, देसंविवि एवं गायत्री विद्यापीठ में छाई राष्ट्रभक्ति की उमंग

शान्तिकुञ्ज परिसर में बैण्ड के साथ ध्वजवंदन करती बहिनें और गायत्री विद्यापीठ के बच्चे

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं गायत्री विद्यापीठ में 79वाँ स्वतंत्रता दिवस उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया। अखिल विश्व गायत्री परिवार की दिव्य भावनाओं की पोषक स्नेह सलिला श्रद्धेया शैल जीजी ने शान्तिकुञ्ज में ध्वजारोहण किया। शान्तिकुञ्ज के सुरक्षा दस्तों सहित विविध समूहों ने राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए माँ भारती को अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किए। गायत्री विद्यापीठ के छात्र-छात्राओं द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं। देशभक्ति गीतों, नृत्य व लघुनाटक ने उपस्थितजनों को भावविभोर कर दिया। इस अवसर पर सम्पूर्ण वातावरण राष्ट्रभक्ति, अपनी उदात्त संस्कृति और लोकमंगल के लिए त्याग, समर्पण के भाव से सराबोर दिखाई दिया। ध्वजारोहण समारोह में व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि सहित शान्तिकुञ्ज, देसंविवि परिवार और देश-विदेश से आये अनेक नर-नारी उपस्थित रहे।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय और गायत्री विद्यापीठ में भी ध्वजारोहण समारोह आयोजित किये गए। ध्वजारोहण के पश्चात् विद्यार्थियों ने देशभक्ति से ओतप्रोत गीत, नृत्य, नुक्कड़ नाटक और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम करते हुए समारोह को जीवंत बना दिया था।

शान्तिकुञ्ज में 100फीट ऊँचे ध्वज का वंदन और पूर्व संध्या पर निकाली गई तिरंगा यात्रा का चैतन्य सिद्ध क्षेत्र में भव्य समापन

100 फीट ऊँचे तिरंगे का वंदन : स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर शान्तिकुञ्ज परिसर में 100 फुट ऊँचे तिरंगे का पूजन देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, महिला मंडल शान्तिकुञ्ज की संचालिका आदरणीया श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी और शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक आदरणीय श्री योगेंद्र गिरी जी ने किया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित ध्वजारोहण समारोह में दिखे राष्ट्रभक्ति के रंग

स्वतंत्रता दिवस पर शुभकामनाएँ एवं परिजनों के नाम संदेश

राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए हर व्यक्ति तक युग चेतना का विस्तार करें।

इन दिनों जब हम अखंड दीपक के प्राकट्य तथा परम वंदनीया माताजी के अवतरण की शताब्दी के विशेष उल्लास के साथ स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं, तब राष्ट्र के सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के हमारे संकल्प और भी प्रबल हो जाते हैं। आज राष्ट्र की स्वतंत्रता और सुरक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले महापुरुषों और वीर जवानों के प्रति अपने भाव सुमन समर्पित करते हुए गुरुदेव-माताजी के शक्ति अनुदानों से नए भारत के निर्माण के लिए हर व्यक्ति तक युगचेतना के विस्तार का संकल्प लेने का अवसर है। - श्रद्धेया शैल जीजी

स्वतंत्रता दिवस अधिकारों की ही नहीं, उत्तरदायित्वों की भी याद दिलाता है।

स्वतंत्रता दिवस हमें अपने राजनीतिक अधिकारों के साथ राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों का स्मरण कराता है। यह हमें आत्मनिर्भरता, आत्मविकास और राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिए पूरे मनोयोग से समर्पित होने की प्रेरणा देता है। - श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

चरित्र, कर्म और चेतना से राष्ट्र को गौरवान्वित करें।

हम सभी को स्वतंत्रता दिवस के पवित्र अवसर पर आत्मनिर्माण और राष्ट्रनिर्माण का संकल्प लेना चाहिए। मातृभूमि के प्रति प्रेम केवल भावना नहीं, बल्कि साधना, सेवा और सतत आत्म परिष्कार का संकल्प है। पूज्य गुरुदेव का कथन है, ''सच्चा देशभक्त वही है, जो अपने चरित्र, कर्म और चेतना से राष्ट्र को गौरवान्वित करे।''

-आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर कृष्ण भक्ति में डूबा शान्तिकुञ्ज परिवार

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व शांतिकुंज के मुख्य सभागार में उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया गया। देश-विदेश से आए हुए साधकों, शांतिकुंज परिवार एवं देवसंस्कृति विश्वविद्यालय परिवार ने भाग लेकर कृष्णमय वातावरण में डूबकर भक्ति का आनंद लिया।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुखद्वय श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैलदीदी ने अपने संदेश में कहा कि भगवान श्रीकृष्ण धर्म, कर्म और प्रेम से भर देने वाले दिव्य अवतार हैं। उनकी लीलाएं हमें जीवन के हर क्षेत्र में संतुलन, प्रेम और निष्ठा के साथ कार्य करने की प्रेरणा देती हैं। देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति और युवा आइकॉन डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि कृष्ण की भक्ति युवाओं को आत्मिक ऊर्जा देती है। आज की पीढ़ी यदि श्रीकृष्ण के आदर्शों को जीवन में उतार ले, तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन संभव है।

इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरूआत कृष्ण भक्ति से ओतप्रोत भजनों के साथ हुई, जिनमें उपस्थित जनसमूह झूम उठा। जन्माष्टमी पर्व के वैदिक कर्मकाण्डों का आयोजन भी विधिवत संपन्न हुआ। इस दौरान श्री श्याम बिहारी दुबे ने भगवान श्रीकृष्ण की विभिन्न लीलाओं, माखनचोरी, गोवर्धन लीला, रासलीला आदि का भावपूर्ण एवं जीवंत प्रस्तुतिकरण किया। पूरे शांतिकुंज परिसर में भक्ति, उल्लास और आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव किया गया। सभी ने मिलकर नंद के घर आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की जैसे अनेक भजनों के साथ भगवान श्रीकृष्ण के अवतरण का स्वागत किया।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व समारोह में भक्तिरस में डूबे शान्तिकुञ्ज के अंतेवासी एवं शिविरार्थी साधकगण

'राष्ट्र प्रथम' के संकल्प के साथ

शान्तिकुञ्ज में हो रहा है नए सत्रों का शुभारंभ

वर्तमान में भारत एक संवेदनशील दौर से गुजर रहा है। सीमाओं पर स्थिति गंभीर हैं। देश को अपने नागरिकों की सजगता, समर्पण और संकल्प की आवश्यकता है। सीमा पर बढ़ते तनाव ने हमें एक बार फिर यह स्मरण कराया है कि राष्ट्र रक्षा केवल सीमा पर तैनात सैनिकों का दायित्व नहीं, बल्कि हर जागरूक नागरिक का धर्म है।

हमारा गायत्री परिवार सदैव से राष्ट्र निर्माण, सांस्कृतिक जागरण और जनचेतना का अग्रदूत रहा है। आज समय की पुकार है कि हम 'राष्ट्र प्रथम' के संकल्प को जीवन में उतारें। इस उद्देश्य से शांतिकुंज, हरिद्वार में एक विशेष प्रशिक्षण शिविर प्रारम्भ किया जा रहा है, जहाँ **सेना, अर्धसैनिक बलों एवं पुलिस सेवा से प्रशिक्षित विशेषज्ञों द्वारा शारीरिक, मानसिक एवं आपातकालीन स्थितियों से निपटने हेतु प्रशिक्षण दिया जाएगा।**

हमारा आह्वान है

- वे युवा परिजन जो राष्ट्र सेवा हेतु तत्पर है, आगे आएं।
- वे सृजन सैनिक जिनके हृदय में देश के लिए कुछ कर गुजरने की ललक है, वे आवेदन करें।
- वे परिजन जो पूर्व में सेना, पुलिस, अर्धसैनिक या सुरक्षा बलों में सेवा दे चुके हैं, कृपया इस अभियान से जुड़ें और मार्गदर्शन करें।

यह कोई युद्ध की तैयारी नहीं, यह शांति, आपातकालीन परिस्थितियों और सुरक्षा के लिए सजग प्रहरी बनने की साधना है। गायत्री परिवार का प्रत्येक सदस्य इस संकल्प में सहभागी बने, यही आज की सच्ची साधना और युगधर्म है।

इच्छुक परिजन कृपया शीघ्र पंजीकरण कराएँ

ई-मेल : apda.rastrarakhsa.prashikshan@awgp.org

धराली, उत्तरकाशी आपदा राहत हेतु भेजा राहत दल

5 अगस्त को उत्तराखंड के उत्तरकाशी जनपद के धराली क्षेत्र में बादल फटने से हुई भीषण त्रासदी सर्वविदित है। इस हृदय विदारक वेला में शान्तिकुञ्ज ने अपनी सहज संवेदनशीलता का अविलम्ब परिचय दिया। श्रद्धेया शैल जीजी की अध्यक्षता में शान्तिकुञ्ज आपदा प्रबंधन दल की बैठक हुई, जिसमें श्री इन्द्रजीत सिंह के नेतृत्व में आपदा राहत सर्वे एवं राहत दल का गठन कर उसे अगले ही दिन, 6 अगस्त को उत्तरकाशी के लिए रवाना किया गया।

बैठक में स्नेहसलिला श्रद्धेया शैल जीजी ने घटना पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए सभी से पीड़ितों की सहायता के लिए उदारतापूर्वक आगे आने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हम माँ गायत्री से प्रार्थना करते हैं कि हताहतों को शांति एवं शोकाकुल परिवारों को धैर्य प्रदान करें। संकट की इस घड़ी में शान्तिकुञ्ज आपदा प्रभावित परिवारों के साथ खड़ा रहेगा।

व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि ने कहा कि हम प्रशासन एवं परिजनों के सतत संपर्क में हैं। पीड़ितों की आवश्यकताओं का आकलन कर आवश्यकतानुसार सहायता पहुँचाई गई है और आगे भी पहुँचायी जायेगी।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक-** प्रमोद शर्मा। **पता :-** शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.org
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 27.08.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26